

ISSN : 2456-8856

पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/9510

डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2024-2026 उज्जैन (म.प्र.)

UGC Care Listed and Peer Reviewed Referred Bilingual Monthly International Research Journal
प्रेषण दिनांक 30

पृष्ठ संख्या 28

आश्वस्त

वर्ष 26, अंक 248

जून 2024



कबीरा आप ठगाईये, और न ठगिये कोय ।
आप ठगे सुख उपजे, और ठगे दुख होय ॥



संपादक - डॉ. तारा परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

संस्थापक सम्पादक

डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

संरक्षक

सेवाराम खाण्डेगर

11/3, अलखनन्दा नगर, बिड़ला हॉस्पिटल के पीछे,
उज्जैन मो.: 98269-37400

परामर्श

आयु. सूरज डामोर IAS

पूर्व सचिव-लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण वि.
म.प्र.शासन, भोपाल मो. 094253-16830

सम्पादक

डॉ. तारा परमार

9-बी, इन्द्रपुरी, सेठी नगर, उज्जैन-456010
मो. 94248-92775

सम्पादक मण्डल :

डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली

डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, गुजरात

डॉ. जसवंत भाई पण्ड्या, गुजरात

डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, म.प्र.

Peer Review Committee

डॉ. श्रवणकुमार मेघ, जोधपुर(राजस्थान)

प्रो. दत्तात्रय मुरुमकर, मुंबई (महाराष्ट्र)

प्रो. रश्मि श्रीवास्तव, उज्जैन (म.प्र.)

डॉ. बी.ए.सावंत, सांगली (महाराष्ट्र)

कानूनी सलाहकार

श्री खालीक मन्सूरी एडव्होकेट, उज्जैन

अनुक्रमणिका

| क्र. | विषय | लेखक | पृष्ठ |
|------|--|---|-------|
| 1 | अपनी बात | डॉ. तारा परमार | 3 |
| 2 | गोविन्द मिश्र की कहानी संग्रह 'मुझे बाहर निकालो' में बदलते पारिवारिक संबंध | कविता | 4 |
| 3 | Ground realities related to sexual problems and reproductive status of PwD and PwIDD | Sandeep Kumar Dr. Rina Godara | 6 |
| 4 | कोकणा-कोकणी जनजाति में पारंपरिक मनोचिकित्सा पद्धति द्वारा निदान एवं उपचार की दृष्टि | बापू अर्जुन चव्हाण डॉ. के. बालराजू | 10 |
| 5 | नागपुर में स्थित प्रसिद्ध बुद्ध विहार | प्रा. डा. आकाश दौलतराव गेडाम प्रा. मोहिनी पुडलिकराव गजभिये | 13 |
| 6 | संत रैदास की दलित चेतना : विविध आयाम | डॉ. सचिन कदम | 16 |
| 7 | भारतीय परिप्रेक्ष में जाति व्यवस्था : डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर | डॉ. वसंत आबासाहब खरात | 19 |
| 8 | प्रसन्नता का सूचकांक : भारत के संदर्भ में | डॉ. प्रताप जगन्नाथ फलफले | 21 |
| 9 | Issues and Challenges to Dealing with AI-Assisted Terrorism | Pragati Navanath Dhakane Dr. Adhara Deshpande | 24 |

UGC Care Listed Journal

खाते का नाम - आश्वस्त (Ashwast)

खाते का नं.- 63040357829

बैंक - भारतीय स्टेट बैंक,

शाखा- फ्रीगंज, उज्जैन (Freeganj, Ujjain)

IFS Code - SBIN0030108

Web : www.aashwastujjain.com

E-mail : aashwastbdsamp@gmail.com

| | | |
|-----------------------|---|----------------|
| एक प्रति का मूल्य | : | रुपये 20/- |
| वार्षिक सदस्यता शुल्क | : | रुपये 200/- |
| आजीवन सदस्यता शुल्क | : | रुपये 2,000/- |
| संरक्षक सदस्यता शुल्क | : | रुपये 20,000/- |

विशेष : सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंध अवैतनिक तथा पत्रिका में प्रकाशित विचारों से सम्पादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उज्जैन रहेगा।

अपनी बात

अक्खड़ और फक्खड़ संत कबीर भारतीय मध्यकालीन सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत में दैदीप्यमान नक्षत्र है जो सामाजिक जड़ताओं, अंधविश्वास, पाखण्डों, सांस्कृतिक भेदभावों की आंधियों का सामना करते हुए सामाजिक जीवन को खुशहाल और न्याय संगत बनाने के लिये संघर्षरत रहे।

**“कबीरा खड़ा बाजार में, लिये लकूटी हाथ।
जो घर जारे आपना, चले हमारे साथ।।”**

संत साहित्य में कबीर की रचनाओं का सर्वोच्च स्थान है। उन्होंने बड़ी से बड़ी बात को भी इतनी सहजता व सरल भाषा में कही है कि सामान्य व्यक्ति भी उसे समझ सकता है। पक्षपात रहित होकर हिन्दू-मुसलमान, दोनों को खरी-खरी सुना देने वाले फिर भी दोनों के पूज्य, अलौकिक व्यक्तित्व के धनी संत कबीर न केवल तत्कालीन समाज, वरन् आज भी संपूर्ण विश्व को मार्गदर्शन दे रहे हैं।

‘मसि-कागद छुऔ नहीं, कलम गही नहिं हाथ।’

कबीर ने जो भी कहा, अनूठा ही कहा। उनके तत्व दर्शन की थाह में दार्शनिक विवेचन और विश्लेषण द्वारा नहीं, सत्य की सहज साधना द्वारा ही पहुंचा जा सकता है। गुरु-शिष्य के संबंध के विषय में कबीर ने बहुत कुछ कहा है।

“कर्म फांस छूटे नहीं, केतौ करौ उपाय।

सद्गुरु मिले तो ऊबरै, नहीं तो परलय जाय।।”

कबीर भक्ति और प्रेम के साथ-साथ कर्म की महत्ता को स्वीकारते हुए कहते हैं –

“कहे कबीर कछु उद्यम कीजै।

आप खाय औरन को दीजे।।”

लोक व्यवहार के संबंध में उन्होंने कहा है—

“जो ताको कांटा बुवै, ताहि बोव तू फूल।

तोको फूल के फूल हैं, वाके है तिरशूल।।”

यदि संत कबीर के इस उपदेश को अमल में लाया जाए तो समाज में व्याप्त अनगिनत समस्याएं समाप्त हो

जाए। कबीर का कहना है कि जीव और ब्रह्म एक ही है परंतु जब तक विरह की साधना द्वारा जीव इस अद्वैतावस्था तक नहीं पहुंच पाता, तब तक भेद रहेगा। इस विरह की साधना को ही कबीर सहज मार्ग कहते हैं। वे कहते हैं जिस मार्ग से भी हरि मिल जाए वही सहज मार्ग है। कबीर आत्म ज्ञानी हैं। वे आत्मानुभव के उपासक हैं और बाह्य आडम्बर का खण्डन करते हैं। उनका खण्डन सुधार मूलक होकर नये मूल्यों का सृजन करना है।

कबीर के आध्यात्मिक सिद्धांत में आचार-विचार का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि आत्मदर्शन के लिये आचार-विचारों की शुचिता वांछनीय ही नहीं आवश्यक भी है। कबीर की वाणी में दूसरा स्थान साधु की संगति का है। साधु की संगति सत्संग व असाधु की संगति कुसंगति है।

“कबीर तन पंछी भया, जहाँ तम तहाँ उड़ि जाय।

जो जैसी संगति करे, सो तैसे फल खाय।”

वे भक्त के स्वर में पुकारते हैं—

“मथुरा जावै, द्वारिका जावै, जावै जगन्नाथ।

साधु संगति, हरि भगती बिन, कछु ना आवे हाथ।”

कबीर ने साधु का भक्त के रूप में वर्णन किया है—

“राम वियोगी तन विकल, ताहिन चिन्है कोई।

तंबोली के पान ज्यूं दिन-दिन पीला होई।।”

कबीर का सारा साहित्य ही नैतिक भावना से भरा हुआ है।

“सील संतोष सदा समदृष्टि, रहनि-गहन में पूरा।

ताके दरस-परस भय भावै, क्लासे सब पूरा।।”

अंधकार युगीन तत्कालीन और परवरतीय समाज में पूत भावना भरने का श्रेय कबीर को ही है। इसीलिये वे युगातीत होते हुए भी युगपुरुष हैं। उनके व्यक्तित्व में मौजूद तार्किकता, आक्रोश, विद्रोह और फक्कड़पन आज के आन्दोलन की आवश्यकता है। हमें संत कबीर को इस दृष्टि से ग्रहण करना चाहिए।

साहेब बंदगी!

– डॉ. तारा परमार

गोविन्द मिश्र की कहानी संग्रह 'मुझे बाहर निकालो' म में बदलते पारिवारिक संबंध

— कविता

गोविंद मिश्र हिंदी साहित्य जगत के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर माने जाते हैं। इन्होंने अपनी कहानियों में जीवन स्थितियों के विभिन्न रंगों को रेखांकित किया है। गोविंद मिश्र की दृष्टि मौलिक चिंतन की है। इसी मौलिक चिंतन के आधार पर उन्होंने सामाजिक सियनों पर नजर गड़ाते पारिवारिक जीवन के सौंदर्य को झलकाया है। इनकी 'मुझे बाहर निकालो' कहानी संग्रह का पहला संस्करण 2004 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में संकलित कहानी इस प्रकार है:—

1. मुक्ति, 2. लहर, 3. शिकार, 4. अक्षम
5. अंश 6. सार्धें 7. जड़ें 8. मुझे बार निकालो।

गोविंद मिश्र की सभी कहानियों में पारिवारिक पृष्ठभूमि का अतिक्रमण किया गया है। किसी भी परिवार का आधार स्त्री-पुरुष संबंध ही होते हैं। आधुनिक काल में समझ में भारी बदलाव होने से रक्त संबंधों की संवेदना में भी बहुत भारी परिवर्तन हुए हैं। गोविंद मिश्र ने इन्हीं बदलते पारिवारिक संबंधों को अपनी कहानियों में शब्दबद्ध किया है। समाज में रहने के लिए परिवार एक बहुत महत्वपूर्ण इकाई है। परिवार में सभी सदस्य आपस में भावनात्मक रूप से जुड़े होते हैं। परिवार ही वह संस्था है जिससे मनुष्य के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है। बच्चा जिस परिवार में जन्म लेता है वह उसी परिवार का एक अभिन्न अंग बन जाता है। वही परिवार इस बच्चे का पालन-पोषण व शिक्षा का प्रबंध करता है। परिवार के माध्यम से ही वह बच्चा संस्कार सीखकर समाज में व्यवहार करता है। वही परिवार बच्चों को समाज या देश का सर्वश्रेष्ठ नागरिक बनाता है।

भारतीय समाज में प्रायः दो प्रकार के परिवार पाए जाते हैं—एकल परिवार और संयुक्त परिवार। यद्यपि परिवार एक आधारभूत संस्था है लेकिन फिर भी समयानुसार इसका स्वरूप बदलता रहता है। संयुक्त परिवार में सभी सदस्य एक ही छत के नीचे रहकर

साथ-साथ भोजन करते थे तथा सभी रीति रिवाज का पालन करना होता था। संयुक्त परिवार सामाजिक दृढ़ता का आधार समझे जाते हैं जोकि वर्तमान काल में टूटकर बिखर चुके हैं। तथा एकल रूप में आगे बढ़ रहा है।

मनुष्य की बढ़ती स्वार्थ मनोवृत्ति ने पितृसत्ता को हिलाकर रख दिया है। आज के समय संयुक्त परिवार के स्थान पर एकल परिवार को ज्यादा महत्व देते हैं। एकल परिवार में पितृसत्तात्मक बुनियाद में कमी आई है। इन परिवारों में घर का पुरुष प्रधान नहीं होता बल्कि स्त्री व पुरुष दोनों मिलकर अपना जीवन यापन करते हैं। लेकिन अभी भी पुरुष के अंदर का पुरुषोत्त्व पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ है। इसका जिक्र गोविंद मिश्र ने अपनी 'मुक्ति' कहानी में किया है। 'मुक्ति' कहानी में पति-पत्नी का संबंध दर्शाया है — 'जरा किसी चीज में देर हो गई तो गुहारी, 'ओ री.... अरे कहाँ मरत हो, और या सासगधन की देखो तो देखो तो भीतर कैसी पंचायत कर रही है...' उन्हें रती भर ख्याल नहीं कि अब आखिर इनकी भी उम्र हो गई, लड़कों-बच्चों की तरह तो आनन-फानन इधर से उधर पहुंच नहीं सकती, खिझकर ये भी चिल्ला पड़ती है।'

इसी कहानी में पति-पत्नी के बीच की नोक-झोंक का वर्णन किया गया है जिससे पत्नी अपनी जिंदगी में घुटी हुई अनुभव करती है उनके झगड़े पति-पत्नी की आम नोक-झोंक नहीं है, महाभारत के द्वंद्व युद्ध है जो अलग-अलग दिनों के पृथक-पृथक प्रहारों में... लेकिन रोज लड़े जाते हैं, जहां दिनों-दिन योद्धा एक ही है। दोनों घायल हो, अपने-अपने शिविरों में लौट जाते हैं, दूसरे दिन युद्ध में फिर लड़ने के लिए। मरता कोई नहीं। साठ सालों से यह युद्ध चला आ रहा है, दोनों कहारते हैं — कब मिलेगी मुक्ति प्रभु ?²

'अंश' कहानी में माता-पिता के साथ बेटे के रिश्ते

को दर्शाया गया है। इसमें बेटे का अपने पिता की मृत्यु पर आने के लिए बोझिल सा लगता है क्योंकि ज्यों-ज्यों भौतिकवाद बढ़ रहा है स्वार्थपन उतना ही पनप रहा है। अनूप की मां अपने विदेश गए बेटे को उसके पिता की मृत्यु के बाद फोन करती है। तो अनूप किस प्रकार असंवेदनशील जवाब देता है—‘बेटा तुम्हारा आना जरूरी है क्रिया-कर्म तो तुम्ही को करना है।’ ‘क्यों किसी और से नहीं कराया जा सकता क्या, उसके लिए इतना खर्च?’³ जिस पिता ने अनूप को विदेश भेजने के लिए दिन-रात एक कर दी थी, वही बेटा आज अपने पिता के क्रिया-कर्म करने के लिए पैसे और समय बर्बादी समझता है। व्यक्तित्व उपलब्धि के सामने नैतिक मूल्य समाप्त होते दिखाई देते हैं। आज बदलते परिवेश में माता – पिता और बच्चों की सोच में बहुत अंतर आया है। माता-पिता अपने बच्चों का पालन-पोषण बड़े प्यार तथा उच्च आशाएं अपने मन में संजोकर करते हैं, लेकिन वही बच्चे वृद्धावस्था में उनका साथ छोड़ देते हैं।

‘अक्षम’ कहानी में डॉ. राय अपने पिता के अंतिम संस्कार पर आने से मना कर देता है।

‘राय भैया! आ जाओ, सोचो, तुम्हारे बिना और कौन करेगा अंतिम संस्कार ! यह मेरी समस्या नहीं है उसकी समस्या... (कहते कहते डॉ. राय रुक गए)... उन लोगों की समस्या है।’⁴

आजकल माता-पिता और बच्चों में वात्सल्य का अभाव है अक्षम कहानी में इसका बखूबी वर्णन किया गया है—‘मां की बात भी क्यों ना करूं। मैं चार साल का था तब दोनों ने मुझे घर से निकाल दादी के पास छोड़ दिया। बाप भेज रहा था तो मां जिद्द करके अपने पास रख सकती थी।’⁵ ‘मेरे लिए उन्होंने किया ही क्या पढ़ाई मैंने की, अपने बलबूते पर यहां पहुंचा हूं। दरअसल उन लोगों ने कभी मुझे चाहा ही नहीं।’⁶ महानगरीय प्रवेश में माता – पिता और बच्चों का अलगाव बहुत ज्यादा मात्रा में हो रहा है। बच्चे अपनी मर्यादा भूलते जा रहे हैं।

‘शिकार’ कहानी में देवरानी जेठानी का बिखरता संबंध दर्शाया गया है।

‘उस घर में मेरी जेठानी की ही चलती है। उसी के वश में है जेठ और पति को न मुझसे लगाव है न अपने बेटे से। पहले बेटे की मौत भी मुझ पर मढ़ दी गई – यह कुलच्छिनी है, बेटे को चाट गई, पता नहीं किस-किसको को खाएगी यहां... अपशकुनी है ...’⁷

‘लहर’ कहानी में पति-पत्नी के बोझिल जटिल संबंधों को दर्शाया गया है। इस कहानी में रश्मि का पति सर्वेश परिवार में पुरुष प्रधान सोच को महत्व देता है – ‘वह चाहती है कि उसकी अपनी निजी सोच हो, वह उसके अनुसार काम करें... पर यह पुरुष प्रधान समाज उसे अपनी सोच के लायक रखता ही कहां है – कैसे सभ्य – सभ्य मार पड़ती है उस पर।’⁸

व्यक्तित्व उपलब्धि प्राप्त करने की होड़ में पारिवारिक रिश्तों में बिखराव की स्थिति उत्पन्न हो रही है। गोविंद मिश्र की ‘नया घर’ कहानी इसका प्रमाण है। ‘नया घर’ कहानी में सोनू की मम्मी अपनी व्यक्तिगत सफलता के बारे में सोचती रहती है जिसे सोनू एक दिन अपनी मम्मी को छोड़कर पापा के साथ रहने का फैसला कर लेता है—‘मम्मी आपको हर चीज मिल जाएगी एक बेटे की जगह दो बेटे... लेकिन पापा... ? वे अपने लिए कुछ ना कुछ बना सकते हैं, न आगे बढ़कर कोई चीज अपने लिए खींच सकते हैं। मेरे सिवा उनके साथ रहने को कोई नहीं है। मुझे कहीं भी रहकर पढ़ना ही है—हॉस्टल या घर। आप कहें तो उस हालत में जब आप अपना नया घर बनाती हैं, मैं पापा के साथ रहूँ, उनका मन लगा रहेगा...’⁹

नई शिक्षा पद्धति, बाजारवाद, भूमंडलीकरण, उपभोक्तावादी संस्कृति, पाश्चत्य सभ्यता का प्रभाव आदि के कारण जीवन मूल्यों के प्रति युवा मानस के विद्रोह, लगाव, अहम, कुंठा, संकुचित मानसिकता ने उनको यथार्थवादी और संख्यावादी बना दिया है इसलिए वह किसी पर विश्वास नहीं करता है। मानव की सहानुभूति की भावना और संवेदना खत्म होती जा रही है। पैसे कमाने की अंधी दौड़ में अच्छे-बुरे का विचार भूलने लगे हैं। युग परिवर्तन के साथ जीवन मूल्य भी बदलते जा रहे हैं। रमेश देशमुख के शब्दों में

—‘मनुष्य जिस समाज में रहता है, उसके प्रभाव से बच नहीं सकता। उसका मूल — चिंतन सामाजिक व्यवस्था का प्रभाव अन्तर्मुक्त कर लेता है। मूल्य की प्रक्रिया जटिल है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। इसी कारण वह समाज परिवार से मूल्य ग्रहण करता है। इतना ही नहीं वह स्थान, प्रदेश, राष्ट्र तथा विश्व के मूल्यों को भी अपनाता है। इस मूल्य ग्रहण से उसकी मान्यता में भी परिवर्तन होने लगता है।¹⁰

सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन के साथ-साथ पारिवारिक मूल्यों में भी परिवर्तन अवश्य आते हैं। सामाजिक मूल्य संपूर्ण संस्कृति एवं समाज को महत्ता प्रदान करते हैं।

अतः उपरोक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता के बाद पारिवारिक मूल्यों में बदलाव आया है जीवन में नई मूल्यों की स्थापना ने पुराने नैतिक और पारिवारिक मूल्यों को ध्वस्त कर दिया है। इसलिए गोविंद मिश्र ने व्यक्ति के जीवन में संबंधो के बिखराव पर पैनी दृष्टि डाली है।

— कविता

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)

राजकीय महाविद्यालय जसिया रोहतक (हरियाणा)

स्थाई पता - Kavita

E-1206 Suncity heights,

Ladot Road, Sec-36A

Rohtak, Haryana Pin code 124001

Mob No- 8950006454

संदर्भ :

1. गोविन्द मिश्र, 'मुक्ति', 'मुझे बाहर निकालो' राधाकृष्ण प्रकाशन प्राईवेट लिमिटेड नई दिल्ली, प्रथम प्रकाशन पृ. 10.
2. वही पृ. 12.
3. 'अंश' कहानी पृ. 21
4. 'अक्षम' कहानी पृ. 57
5. वही पृ. 58
6. वही पृ. 60
7. 'शिकार' कहानी, पृ. 49
8. 'लहर' कहानी पृ. 35, 36
9. 'नया घर', पृ. 104
10. डॉ. रंगेश देशमुख, आठवें दशक की हिंदी कहानी में जीवन मूल्य, पृ. 72 से उद्धृत।

Ground realities related to sexual problems and reproductive status of PwD and PwIDD

- Sandeep Kumar (Ph.D Scholar)

- Dr. Rina Godara

INTRODUCTION

Individuals with intellectual disabilities experience cognitive limitations, challenges in conceptual, social, and practical skills, and can be classified as mild, moderate, severe, or profound. Sexual and reproductive health is crucial for disabled persons, but many adolescents lack access to education, particularly for those with disabilities and intellectual disabilities. In general, talking about sexual issues is a taboo subject and the sexuality of individuals with persons with intellectual disability is a matter of both fear and denial. Many people even do not acknowledge that all people have sexual feelings, needs and desires irrespective of their physical and intellectual abilities. Many parents, who are the primary educators for children on sexual and reproductive issues, are afraid or unsure of their competence to handle these matters. Addressing sexual issues in adolescents with intellectual disabilities is crucial for their health and wellbeing. Inappropriate education and social isolation increase their risk of committing crimes. However, with

proper training and support, they can develop self-protection, creative sexual expression, and healthy relationships, facilitating their rehabilitation into society. This qualitative study explores sexual issues faced by PwID in adolescence through case studies of four intellectually disabled individuals. The study aimed to understand puberty, sexual desires, marriage, and reproduction issues through unstructured personal interviews with parents/caregivers, with transcripts prepared and observations recorded by the researcher. The case of these four students is presented as follow :

Case 1

Parsh, a 23-year-old mildly intellectually disabled individual, was suffering due to a birth delay, as revealed during an interview with his father. Parsh, with a mild intellectual disability, struggles with speaking and exhibits signs of a learning disability. The interview reveals that he was sexually assaulted while sleeping with a normal boy during a wedding program, which Parsh disclosed to her mother. But he could not understand what had happened to him. Parsh, a cricket enthusiast, shared his love for the sport with his friends, who introduced him to the harmful practices of masturbation. At

14-year ages, he committed sexual molestation with a female relative and engaged in sexual activities with buffaloes. Parsh was reported to engage in sexually offending activities, including obscene calls and conversations with others. Parents feel helpless due to lack of proper educational training for their child, hindering their understanding and role in their child's social adjustment.

Case 2

The institute fully protects 17-year-old Kallu, an intellectually disabled man from Rajasthan with sexual issues, frequent running away, and aggressive behavior who appears to know about sexual activities. He is especially shy around female visitors from outside. It was revealed that he was attracted to a school teacher, and after the holidays, when the teacher would go home, Kallu would go to the terrace and start masturbating after seeing her. Many times, Kallu is seen holding other students from behind and rubbing his private parts in solitude.

The institution's staff, special teachers, assistants, and parents are avoiding Kallu due to a lack of proper knowledge about sex education. The special teacher engages Kallu in extra

tasks to divert his attention and save him from sexual problems. On inquiring deeply, it was found that no one was competent enough to guide him in sexual related activities.

Case 3

Suraj, a 13-year-old intellectually disabled individual, is receiving full care from the X Institute due to her primary-stage severity of sexual problems. Suraj, like Kallu, is eager for sexual activities and often performs them while avoiding the eyes of all institute employees. He, in a sexually oriented manner, goes to the rooftop of the institution with Kallu, expressing his attraction towards the female teacher. Suraj engages in inappropriate behavior and sexual activities with other disabled students, such as inappropriate touching and excessive love towards attractive individuals or objects. He frequently rubs his private parts when he feels the need to when he gets alone.

Special teachers attempt to involve Sooraj in extracurricular activities, but he uses foul language and sexual symbols, and staff struggle to control his behavior due to limitations. After school hours, the cleaning staff and caretakers make fun of them when they see them in any unnecessary sexual activity or position.

Some of the staff and caretakers are unable to control it even if they want to.

Case 4

Mahesh is a 27-year-old intellectually disabled person from Rajasthan. Along with sexual problems, he also has unusual behaviour like asking for paan-masala from visitors and strangers. It's found that when he sees women, he suddenly grabs them by the shoulders from behind and tries to hold their hands again and again. Especially when he feels the need, he keeps teasing his private parts and is also found rubbing on the bed. Due to lack of knowledge, the employees of the organization joke with Mahesh about paan-masala and ask him to dance and sing songs.

FINDINGS FROM THE STUDY

The common Sexual Activities and Issues observed are:

1. Maintaining closer relationships with women than men.
2. Ignoring men, answering to women;
3. Touching the naked body parts of women, staring them.
4. Showing aggression when not allowing women to approach and showing politeness when coming into contact
5. Sexual abuse/ Masturbation/

Sexual offending

Parents feel helpless and uncomfortable guiding and resolving issues, indicating a need for training to effectively handle such situations. The study revealed that parents exhibited low sensitivity towards the reproductive needs of disabled individuals, neglecting their sexual desires and experiencing embarrassment. They overlooked the issue and did not discuss or seek any guidance from experts. Poor knowledge, poor attitudes of parents, and inaccessibility of certain hospital environments exacerbated reproductive health issues.

Both men and women with intellectual disabilities are at greater risk of sexual exploitation compared to other normal people in the community. This type of sexual abuse can occur from family members, support workers, classmates in the institution, etc. These intellectually disabled people also face many types of physical and emotional traumas due to their significant limitations in intellectual abilities, abnormal adaptive behaviour, etc., They are not able to adjust themselves in any situation.

CONCLUSION

It's been observed that the parents and care givers face lots of challenges in dealing with the sexual and reproductive health of intellectually

disabled adolescents. Therefore, parents need to be empowered and trained, especially the mothers. The teachers and healthcare providers can give the related knowledge and skills to parents so that they can manage such issues and prevent these persons from sexually being exploited or they exploiting the others.

Authors :

- **Sandeep Kumar**, PhD Scholar,
Department of Education,
Central University of Rajasthan,
Mob. 9812198733

- **Dr Rina Godara**,
Assistant Professor,
Department of Education,
Central University of Rajasthan,
Mob. 9825799031

References :

- Government of India (2002), A Handbook for Parents of Children with Disabilities, Planning Commission of Education Division
- American Association on Intellectual Developmental Disabilities: Definition of Intellectual Disabilities. 2013. [Last accessed on 2018 Jan 01]. Available from: <http://aaidd.org/intellectual-disability/definition#.UjosLNit-VM>.
- World Health Organization (WHO) Sexual health, human rights and the law. 2015. Available from: www.who.int/reproductivehealth/.sexual_health/sexual-health-human-rights-law/
- Parchomiuk M. Specialists and sexuality of individuals with disability. Sex. Disabil. 2012;30:407-419. doi: 10.1007/s11195-011-9249-x. [CrossRef] [Google Scholar]
- Rights of Persons with Disabilities Act 2016

कोकणा—कोकणी जनजाति में पारंपरिक मनोचिकित्सा पद्धति द्वारा निदान एवं उपचार की दृष्टि

— बापू अर्जुन चव्हाण (शोधार्थी)

— डॉ. के. बालराजू

सारांश

भारतीय समाज में विभिन्न समुदाय के लोग निवास करते हैं, प्रत्येक समुदाय की अपनी अनूठी जीवनशैली, रहन—सहन, खान—पान, वेषभूषा, परंपराएं और रीति—रिवाज हैं, जो अपनी—अपनी संस्कृतियों और सभ्यताओं से प्रभावित हैं। इन समुदायों में, जनजाति समुदाय प्रकृति के साथ अपने घनिष्ठ संबंध के कारण हमेशा सांस्कृतिक और पारंपरिक रूप से समृद्ध रहा है। परिणामस्वरूप, यह समुदाय अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने और समस्याओं को हल करने के लिए पारंपरिक तरीकों का उपयोग करने में विशेष रूप से उत्कृष्टता प्राप्त करता है। यह ज्ञान प्रणाली जनजातिय समुदाय में पीढ़ी—दर—पीढ़ी, पुरानी पीढ़ी से लेकर युवाओं तक हस्तांतरित होती रही है। शोध पत्र पारंपरिक मनोचिकित्सा विधियों का उपयोग करके निदान और उपचार तकनीकों का अध्ययन करने पर केंद्रित है। तथ्य संकलन हेतु गहन साक्षात्कार और अवलोकन विधि का उपयोग किया गया है। भौगोलिक क्षेत्र के रूप में महाराष्ट्र राज्य के नाशिक जिले का कलवन तहसील है, जहाँ कोकणा— कोकणी जनजाति समुदाय निवास करता है।

प्रमुख संप्रत्यय : परंपरागत मनोचिकित्सा पद्धति, मनोचिकित्सकीय समाजकार्य, कोकणा— कोकणी समुदाय, देशज ज्ञान।

प्रस्तावना

कोकणा—कोकणी जनजाति भारत के पश्चिमी राज्यों, विशेष रूप से महाराष्ट्र और गुजरात में स्थित है। ऐतिहासिक रूप से, इस जनजाति की उत्पत्ति महाराष्ट्र के कोकण पट्टी क्षेत्र में हुई थी और इसे कोकना, कोकनी और विभिन्न नामों से जाना जाता है। वर्तमान में यह जनजाति महाराष्ट्र, गुजरात और केंद्र

शासित प्रदेश दमन—दीव में पाई जाती है, जिसकी आबादी गुजरात और दमन—दीव की तुलना में महाराष्ट्र में अधिक है। मुख्य रूप से यह समुदाय सतपुड़ा और सहयाद्रि पर्वत श्रृंखलाओं में रहता है और वन संसाधनों, पशुपालन और कृषि से संबंधित व्यावसायिक गतिविधियों के माध्यम से अपना भरण—पोषण करता है। कृषि में रुचि और सुधार के परिणाम स्वरूप इस समुदाय में समृद्धि और सामाजिक स्थिरता बढ़ी है। पीढ़ियों से प्रकृति के साथ घनिष्ठ संबंध के कारण, इस समुदाय के पास पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों का खजाना है। इसके अतिरिक्त, उनके पास अपने पारंपरिक चिकित्सक कुलदेवता के सेवक से शारीरिक और मानसिक बीमारियों के निदान और उपचार करने की परंपरा है। मानसिक बीमारी का निदान इस समुदाय के भीतर एक लंबे समय से चली आ रही प्रथा रही है, जो अक्सर जनजातियों के बीच आम तौर पर पाई जाने वाली गलत धारणाओं से प्रभावित पाई जाती है। यह समुदाय मानसिक बीमारी को बुरी आत्माओं के आक्रमण, देवी—देवताओं की नाराजगी और परिवार पर बुरी आत्माओं के प्रकोप से जोड़कर देखता है और अक्सर मौत के लिए परिवार के किसी सदस्य की आत्मा को जिम्मेदार मानता है। उनका मानना है कि यह एक बुरी शक्ति है, यही कारण है कि केवल पारिवारिक देवता के सेवक ही इसका मुकाबला करने और अपनी पारंपरिक प्रथाओं के अनुसार उपचार प्रदान करने का साहस रखते हैं।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र में कोकणा—कोकणी जनजाति में पारंपरिक मनोचिकित्सा पद्धति द्वारा निदान एवं उपचार की देशज दृष्टि का अध्ययन किया गया है।

कोकणा— कोकणी 'समुदाय' में मानसिक

बीमारी का निदान और उपचार करने वाले चिकित्सकों के पारंपरिक ज्ञान के उद्भव का अध्ययन किया गया है।

कोकणा—कोकणी जनजाति में मनोचिकित्सा के निदान और उपचार हेतु प्रयोग किए जाने वाली पद्धतियों और सामग्री का विश्लेषण किया गया है।

कोकणा—कोकणी समुदाय में मानसिक समस्याओं के निदान और उपचार के दौरान विशिष्ट आहार के पालन की पड़ताल का अध्ययन किया गया है।

कोकणा—कोकणी समुदाय में निदान के दौरान की गई गतिविधियों के पीछे के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारणों का वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र के अंतर्गत कोकणा—कोकणी जनजाति में पारंपरिक मनोचिकित्सा पद्धति द्वारा निदान एवं उपचार की देशज दृष्टि का विश्लेषण किया गया है। शोध की प्रकृति को देखते हुए इसमें वर्णनात्मक शोध प्रारूप का प्रयोग किया गया है। तथ्यों के संकलन हेतु गहन साक्षात्कार किया गया है। जिस हेतु गहन साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। साथ ही अध्ययन विषय की यथार्थ की जांच परख करने हेतु अवलोकन पद्धति का उपयोग किया गया है। यह शोध पूर्णतः गुणात्मक शोध प्रविधि को धारण करता है। इसके अतिरिक्त द्वितीय स्रोतों पर आधारित विषय गत साहित्य को भी आधार बनाया गया है।

मानसिक रोग के निदान एवं उपचार की पारंपरिक पद्धति

आदिवासी समुदाय सदियों से प्रकृति के बीच रहकर जीवनयापन करता आ रहा है। प्रकृति के साथ रहने से, वे अपनी आजीविका के लिए जंगल से प्राप्त फल, फूल, पत्तियाँ और कई तरह के कंद—मूल का भोजन में उपयोग करता रहा। पेड़—पौधों के फल—फूल एवं कंद—मूल का उपयोग भोजन में करने से वह वनस्पतियों के मूल्यों से परिचित होता रहा। पर्यावरण में

पाए जाने वाले जल, जंगल, जमीन, जन, जानवर के महत्व ने उन्हें पूजा करने के लिए प्रेरित किया। प्रकृति के प्रति इस श्रद्धा भाव ने उनकी सांस्कृतिक परंपराओं को प्रभावित किया है, जिसमें त्योहारों एवं पर्व के रूप में पहाड़ों की पूजा करना शामिल है। इसी तरह कोकणा—कोकणी जनजातियों में कुलदेवता के रूप में पहाड़ की पूजा—अर्चना करने की परंपरा मानी जाती रही है। पंद्रह दिन के इस पर्व में प्रकृति की पूजा—आराधना पारंपरिक वाद्य पावरी एवं टापरा के सहयोग से गीतों के द्वारा कुलदेवता की स्तुति एवं नृत्य से की जाती है। इस पर्व में बड़े—बुजुर्गों से लेकर छोटे बच्चों तक सभी बड़े उत्साह के साथ शामिल होते हैं।

अध्ययन के अनुसार इसी पर्व में पूजा—आराधना करने से व्यक्ति को दैविक शक्ति होने का संकेत मिलता है। यदि किसी व्यक्ति को त्योहार के दौरान दैवीय शक्ति का संकेत मिलता है, तो उन्हें त्योहार समाप्त होने तक उसी स्थान पर रहने के लिए कहा जाता है, यह विश्वास करते हुए कि उन्हें प्राकृतिक भगवान का आशीर्वाद मिला है। व्यक्ति को जब यह विश्वास हो जाए कि दैविक शक्ति प्राप्त हुई है उसी के माध्यम से वह बीमार व्यक्तियों का निदान करता है। चिकित्सक के अनुसार जब वह शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर व्यक्ति का निदान करते हैं, तब सम्पूर्ण जानकारी उस रोगी से लेते हैं। या रोगी के साथ कुछ दिनों से घटित घटनाओं को बताया जाता है, ताकि रोगी को चिकित्सक पर भरोसा हो सके। निदान के दौरान रोगी से हुई वार्तालाप से पता चल जाता है कि वह शारीरिक रूप से बीमार है या मानसिक रूप से। रोगी अगर शारीरिक रूप से कमजोर है तब उसको जड़ी—बूटी देकर ठीक हो जाओगे यह भाव उसके मन में भर दिया जाता है। वही रोगी अगर मानसिक रूप से बीमार है तब उसके अचेतन मन में कौन सी घटना का बोझ है, उसके संबन्धित रोगी के संबन्धियों से पूछा जाता है। इस क्रियान्वयन के दौरान चिकित्सक के शरीर में दैविक शक्ति का संचार होते रहता है। वह ऊर्जा निदान करने

के लिए दिशा— निर्देश देती है। एवं सेवक उन दिशा— निर्देशों का पालन करते हुए रोगी का निदान एवं उपचार करता है। निदान के दौरान सकारात्मक माहौल बनाते हुए, रोग का निदान और उपचार किया जाता है। रोगी को अपने स्वास्थ्य सुधार का उचित मूल्यांकन करने के लिए एक विशिष्ट आहार का पालन करने और गाँव से बाहर न जाने की सलाह दी जाती है, ताकि रोगी के स्वास्थ्य में सुधार का सही मूल्यांकन हो पाए। इस तरह से कोकणा—कोकणी जनजाति द्वारा मानसिक रोग के निदान एवं उपचार की पारंपरिक पद्धति प्रचलित है।

निदान के लिए सामग्री

कोकणा—कोकणी समुदाय में पारंपरिक पद्धति से निदान और उपचार के लिए चयनित स्थान शामिल होता है, उस स्थान पर चिकित्सक द्वारा एक लकड़ी की कुटिया बनाई हुई है, जिसकी दीवार पूरी तरह से गाय के गोबर से प्लास्टर की होती है। गोबर से पोती हुई दीवार पर कुलदेवता की प्रतिमा एवं भगवान की मूर्तियाँ होती हैं। साथ ही निदान क्षेत्र के आसपास विभिन्न वस्तुएँ जैसे अगरबत्ती, शंख, मोर पंख वाली झाड़ू और पारिवारिक देवताओं के त्योहार के दौरान उपयोग किए जाने वाले संगीत वाद्ययंत्र रखे होते हैं। निदान स्थान पर उपलब्ध हर वस्तु का अपना महत्व होता है। सबसे पहले अगरबत्ती और धूप जलाने से सकारात्मक माहौल बनाया जाता है, इसके बाद सांकेतिक भाषा का उपयोग करके कुलदेवता की पूजा की जाती है। इस दौरान मरीज से बीच—बीच में उसके अतीत के बारे में पूछताछ की जाती है। जिससे बीमारी का कारण पता चल सके।

निदान के दौरान पथ्य पालन

मानव का स्वास्थ्य बिगड़ने में महत्वपूर्ण कारक खान—पान है। जब कि बुनियादी जरूरतों में भोजन को प्राथमिकता दी है। भोजन का समय, भोजन की मात्रा यह सब मानव स्वास्थ्य पर बहुत प्रभाव डालते हैं। आयुर्वेद ग्रंथ चरक संहिता में भोजन और पेय के महत्व पर जोर दिया गया है, जिसमें कहा गया है कि आधे से अधिक मानव बीमारियाँ अनुचित भोजन के सेवन और

गलत समय पर खाने के कारण होती हैं। यदि व्यक्ति अपने खान—पान पर नियंत्रण रखें तो इनमें से आधे से अधिक बीमारियों को रोका जा सकता है। इसलिए, कोकणा— कोकणी जनजाति समुदाय के पारंपरिक चिकित्सक भी इसे पहचानते हैं और आहार संबंधी आदतों पर प्रतिबंध लगाते हैं। 10—15 दिनों की अवधि के लिए किसी को अपने आहार पर सावधानीपूर्वक ध्यान देने के लिए कहा जाता है।

सामाजिक व मनोवैज्ञानिक कारण

कोकणा—कोकणी समुदाय में पारंपरिक मनोचिकित्सा पद्धति के माध्यम से रोगी ठीक होने में सामाजिक व मनोवैज्ञानिक कारक महत्वपूर्ण हैं। मनोवैज्ञानिक कारक इसलिए महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि इस समुदाय के लोग कुलदेवता को अपना श्रद्धा स्थान मानते हैं। इस समुदाय का मानना है कि कठिन समय में केवल कुल देवता ही उनकी मदद कर सकते हैं, इसलिए जब समुदाय में कोई मानसिक रूप से बीमार होता है, तो उन्हें कुलदेवता के सेवक के पास ले जाया जाता है। उनके अनुसार कुलदेवता के सेवक में वह शक्ति है जो बुरी आत्मा से लड़ सकती है। सामाजिक कारक यूनान के दार्शनिक अरस्तू कहते हैं, 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है', अन्य जीवों की तरह मनुष्य को भी समाज का साथ चाहिए। मानव समाज में रहकर स्वयं का विकास करता है, और उसकी हर प्रकार की आवश्यकताएँ पूरी करता है। मानव समाज के बिना अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक एक दूसरे का सहारा बनकर जीवन यापन करता है। इसी बीच व्यक्ति कभी—कभी शारीरिक एवं मानसिक थकान महसूस करता है। शारीरिक थकान में व्यक्ति चिकित्सक को याद करता है, वही मानसिक थकान होने पर व्यक्ति अपने लोगों को याद करता है। रोगी को कठिन समय में परिवार, रिश्तेदार एवं दोस्तों की जरूरत होती है। इसलिए मानसिक रोगी के ठीक होने के पीछे सामाजिक व मनोवैज्ञानिक कारण महत्वपूर्ण साबित होते हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि कोकणा- कोकणी समुदाय आर्थिक एवं शैक्षणिक रूप से पिछड़ा है लेकिन, सांस्कृतिक एवं परंपरात्मक ज्ञान की दृष्टि से उतना ही समृद्ध है। इस समुदाय की रूढ़ि - परंपरा तथा संस्कृति में पारंपरिक ज्ञान के प्रवाह की झलक मिलती है। अध्ययन से यह पता चलता है कि इस समुदाय में पारंपरिक मनोचिकित्सा पद्धति से मानसिक समस्याओं का निदान किया जाता है। निदान पद्धति का उद्भव कुलदेवता की पूजा-आराधना करने से होता है। निदान के दौरान विशेष तरह की सामग्री के उपयोग से सकारात्मक वातावरण निर्माण करने का कार्य किया जाता है। साथ ही निदान के अवधि में 10-15 दिन खान-पान पर विशेष ध्यान दिया जाता है। निदान करने वाले चिकित्सकों का समाज में विशेष स्थान होता है। इस अध्ययन के माध्यम से यह साबित होता है कि कोकणा-कोकणी समुदाय में मनोचिकित्सा पद्धति से निदान एवं उपचार करने की एक लंबी परंपरा है।

— बापू अर्जुन चव्हाण

पी-एच. डी. शोधार्थी, वर्धा समाज कार्य संस्थान
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय
हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा-महाराष्ट्र.
मोबा. 94210 57320

— डॉ. के बालराजू

एसोसिएट प्रोफेसर, वर्धा समाज कार्य संस्थान
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय
हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा-महाराष्ट्र.

संदर्भ :

गारे, गो. (2007). बदलाच्या उंबरठ्यावरील कोकणा आदिवासी. पुणे : श्रीविद्या प्रकाशन.

देशमुख, प. व. (2005). कोकणा- कोकणी इतिहास आणि जीवन. पुणे : सुगावा प्रकाशन .

सोनार, व. (2003). आदिवासी कोकणांच्या कथा. अहमदनगर : गोदावरी प्रकाशन.

नागपुर में स्थित प्रसिद्ध बुद्ध विहार

— प्रा. डॉ. आकाश दौलतराव गेडाम

— प्रा. मोहिनी पुडलिकराव गजभिये

आधुनिक भारत के इतिहास में नागपुर शहर का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस नागपुर शहर में दि. 14 अक्टूबर 1956 को बाबासाहेब डॉ. आम्बेडकर ने अपने लाखों अनुयायियों की उपस्थिति में बर्मी भिक्षु भदन्त चंद्रमणि महारथविर के द्वारा त्रि-शरण और पंचशील को ग्रहण कर बुद्ध धम्म की दीक्षा ली और बाद में उन्होंने अपने लाखों अनुयायियों को त्रि-शरण और पंचशील ग्रहण करवाकर और स्वयं बाईस धम्म प्रतिज्ञाएं देकर बुद्ध धम्म को ग्रहण करवाया। यह धम्मदीक्षा समारोह दो दिन तक चला। इसमें करीब-करीब सात लाख लोगों ने अपने-अपने परिवार के साथ बुद्ध धम्म की दीक्षा ली। इस समारम्भ में महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों से, नगरों से, गांवों से लोग आये थे।

इसमें भी बुद्ध धम्म को अपनानेवाले बहुसंख्य लोग दलित तथा पिछड़े समाज के ही थे। उसके बाद आधुनिक भारत में सम्पूर्ण महाराष्ट्र में और सम्पूर्ण देश में बुद्ध धम्म को ग्रहण करने का एक आन्दोलनसा शुरु हो गया जो आज भी जारी है। इस नागपुर शहर को विश्वविख्यात बौद्ध भिक्षू तथा विद्वान डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यान ने आधुनिक सारनाथ कहा है। नागपुर की इस दीक्षाभूमि पर सन 1969 में डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यान और डॉ. भदन्त सावंगी मेधंकरजी श्रीलंका से स्थायी निवास के लिये आये थे। आज नागपुर की दीक्षा भूमि पर जहाँ डॉ. आम्बेडकर ने बुद्ध धम्म को ग्रहण किया था और करवाया था वही पर एक विशाल बौद्ध स्तूप बनाया गया है। यह बौद्ध स्तूप आधुनिक संसार के बौद्ध स्तूपों में आकार और कला की दृष्टि से अपना एक अलग स्थान रखता है। इस दीक्षाभूमि पर एक सुन्दर भिक्षु निवास भी है। जो डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यानजी को दीक्षाभूमि पर स्थायी निवास के लिए बनाया गया था।

नागपुर शहर बाबासाहेब डॉ. आम्बेडकर के बौद्ध आन्दोलन का एक बहुत बड़ा केंद्र है। नागपुर की दीक्षाभूमि पर जहाँ बुद्ध धम्म को ग्रहण किया वहाँ एक बहुत ही विशाल और सुन्दर स्तूप बना हुआ है। हर वर्ष विजयादशमी के अवसर पर एक बहुत बड़ा उत्सव होता है और देश-विदेश से लाखों बौद्ध लोग इकट्ठा होते हैं। इस महोत्सव की विशेषता यह है कि यहाँ बहुत बड़ी मात्रा में बुक स्टॉल लगते हैं और लाखों रूपयों की किताबें बिकती हैं, यहाँ दुर्लभ बौद्ध ग्रंथ प्राप्त होते हैं।

नागपुर के प्रसिद्ध बुद्ध विहार

सन 1956 से पहले नागपुर में एक भी बुद्ध विहार नहीं था। लेकिन कुछ लोग बौद्ध संस्था बनाकर बुद्ध धम्म के प्रचार-प्रसार का कार्य कर रहे थे। सन 1956 के बाद बाबासाहेब डॉ. आम्बेडकर द्वारा और उनके अनुयायियों द्वारा बुद्ध धम्म को अपनाने के बाद नागपुर के हर मुहल्ले में, इलाके में बुद्ध विहारों का निर्माण हुआ है। आज अकेले नागपुर शहर में सैकड़ों बुद्ध विहार हैं, इनमें कुछ बिहार बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। और उनके नाम भी प्राचीन बौद्ध स्थलों के नाम पर हैं, कुछ ऐतिहासिक बौद्ध भिक्खुओं के नाम हैं। वे इस प्रकार हैं :-

1. दीक्षाभूमि बुद्ध स्तूप और विहार

नागपुर और नागपुर के ईद-गिर्द जो बुद्ध विहार, बौद्ध स्थल हैं, बौद्ध संस्थाएं हैं उनका राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय महत्व भी है और उन विहारों तथा संस्थाओं को विदेश से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त होता है। नागपुर की दीक्षाभूमि का अन्तर्राष्ट्रीय महत्व है। दीक्षाभूमि पर निर्मित स्तूप अन्तर्राष्ट्रीय ख्याती का स्तूप है। उस स्तूप के तल मंजिल में थाईलैंड से दान स्वरूप प्राप्त भगवान बुद्ध की अष्टधातु की प्रतिमा है, जो थाई बौद्ध मूर्तिकला का उत्तम नमूना है। वही पर बुद्ध मूर्ति के सामने उस स्तूप की प्रतिकृति (माडेल) रखा हुआ है। उसके भीतर बाबासाहेब डॉ. आम्बेडकर की अस्थियाँ रखी हुई हैं, जो दीक्षाभूमि महोत्सव विजयादशमी के दिन लोगों के दर्शन के लिए खोली जाती है। इस स्तूप के निर्माण में कई

साल लगे हैं। इस स्तूप के निर्माण का भी अपना एक बड़ा महत्वपूर्ण इतिहास है। यह स्तूप दो मंजिला है जिसमें पहली मंजिल, तल मंजिल और दूसरी ऊपरी मंजिल। इस स्तूप के दोनों मंजिल पर सभागार है जिसमें एक साथ पांच हजार लोग बैठ सकते हैं। इस स्तूप का निर्माण और इसका संचालन, देखरेख प. पू. बाबासाहेब डॉ. आम्बेडकर स्मारक समिती, दीक्षाभूमि, नागपुर कर रही है। यह स्तूप साँची के स्तूप की तरह ठोस नहीं है, बल्कि इसके भीतर में सभागार है।

इस स्तूप के चारों ओर चार प्रवेश द्वार हैं। इस स्तूप के बाहर बाई ओर बाबासाहेब डॉ. आम्बेडकर की अर्धाकार प्रतिमा है जो इस स्तूप के निर्माण के बहुत पहले से ही वहाँ स्थापित है। इस स्तूप के दाहिनी ओर बोधिवृक्ष है जिसको श्रीलंका से यहाँ लाकर डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायनजी ने वैशाख पूर्णिमा 1968 को पूरे सम्मान के साथ रोपा था। आज वह बोधिवृक्ष विशाल बोधिवृक्ष हो गया है। इसी से लगकर यहाँ एक 'भिक्खु निवास' है जिसमें करीब-करीब बारह-तेरह साल तक डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन और डॉ. भिक्खु मेधंकर का वास्तव्य रहा है। इस दीक्षाभूमि पर बाबासाहेब डॉ. आम्बेडकर महाविद्यालय भी है जिसमें कला, वाणिज्य, विज्ञान और विधि आदि की पढ़ाई होती है।

दीक्षा भूमि पर स्थित स्तूप का उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति डॉ. के. आर. नारायणजी ने 18 दिसंबर 2001 में किया था। नागपुर की दीक्षाभूमि का वास्तव में अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध जगत में बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ से बाबासाहेब डॉ. आम्बेडकर की प्रेरणा के अनुसार ही बुद्ध धम्म के प्रचार और प्रसार का कार्य होता है। यहाँ हर साल विजयादशमी के अवसर पर धम्मदीक्षा समारम्भ का भी आयोजन होता है। जिसमें लाखों लोग सम्मिलित होते हैं। हाल ही में दीक्षाभूमि को सरकार 'अ' गट का पर्यटन स्थल का दर्जा घोषित किया है।

2. बुद्धभूमि महाविहार

नागपुर से दस कि.मी. की दूरी पर कामठी रोड पर

बुद्धभूमि महाविहार बना हुआ है। इस महाविहार का निर्माण डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायनजी और डॉ. भदन्त मेधंकरजी ने किया है। यह महाविहार आठ एकड़ भूमि में बनाया गया है। और इस भूमि को कामठी के एक पारशी परिवार ने दान स्वरूप दिया था। इस भूमि पर 'बौद्ध प्रशिक्षण संस्थान' नाम की एक संस्था कार्य कर रही है जिसकी स्थापना और जिसके संस्थापक अध्यक्ष डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायनजी थे तथा संस्थापक सचिव डॉ. भिक्खू मेधंकरजी थे।

इस भूमि को 'बुद्धभूमि' के नाम से जाना जाता है और इस भूमि पर बने विहार को 'बुद्ध भूमि महाविहार' नाम से देश-विदेश में जाना जाता है। इस बुद्धभूमि महाविहार का उद्घाटन दि. 5 जनवरी 1985 को दलाई लामाजी के द्वारा हुआ था।

इस महाविहार में 'वाट पाकनाम' महाविहार थाईलैंड के दायको उपासकों की ओर से 750 किलोग्राम ब्रांज़ धातु (अष्ट धातु) की तथा 10 फिट ऊँची पूर्णाकार अभय अभिमुख मुद्रा की विशाल बुद्ध प्रतिमा सन 1987 में बुद्धभूमि महाविहार को दान दी गई थी जो महाविहार की पहली मंजिल में स्थापित है। महाविहार के तलमंजिल पर जो सभागार है उसमें भगवान बुद्ध की धम्मचक्र प्रवर्तन मुद्रावाली प्रतिमा है। उसी प्रकार उसमें भिक्खुओं, समाणेरों के निवास के लिए भी कमरे बने हुए हैं। बुद्धभूमि महाविहार के सामने भगवान बुद्ध की 22 फिट उंची पूर्णाकार ध्यानमुद्रा प्रतिमा स्थापित की गई है जो दर्शकों को शान्ति का सन्देश देती है। इस प्रतिमा को सिंहली शिल्पकार ने बनाया है। इस प्रतिमा का उद्घाटन डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायनजी के जन्मदिन 5 जनवरी 2000 को हुआ है। यहाँ सन 1992 में श्रीलंका से लाई गयी मूल बोधिवृक्ष की शाखा को रोपा गया है। यहाँ डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायनजी का 'स्मारक' (स्तूप) के निर्माण का कार्य जारी है। जिस स्थान पर आनन्दजी का अन्तिम संस्कार हुआ था वही पर रमारक स्तूप का निर्माण किया जा रहा है।

आनन्दजी का परिनिर्वाण 22 जून 1988 को नागपूर में ही हुआ था। रमारक स्तूप के पास में ही डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायनजी की सुन्दर प्रतिमा स्थापित है जो बुद्ध भूमि पर उनकी उपस्थिति की यादें ताजा कर देती है। इस महाविहार की स्थापना डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायनजी ने की और वह भी बाबासाहेब डॉ. आम्बेडकर के धम्मकार्य को गति प्रदान करने के लिए इस दृष्टि से इस विहार का बहुत ही महत्व है।

3. इंदोरा बुद्ध विहार

इंदोरा बुद्ध विहार नागपूर के पुराने बुद्ध विहारों में से एक है। इस बिहार की स्थापना सन 1974 में हुई इस विहार को इंदोरा बरती के लोगों ने नियमित रूप से चंदा इकट्ठा करके बनाया है। इस विहार का निर्माण भी बौद्ध वास्तुकलानुसार किया गया है। इस विहार में स्थापित भगवान बुद्ध की पूर्णाकार प्रतिमा थाईलैंड से दान स्वरूप प्राप्त हुई है। यह पूर्णाकार बुद्ध प्रतिमा चारिका मुद्रा में है, सात फिट उंची है और 309 किलोग्राम ब्रॉन्ज़ धातु से बनी है। बुद्ध भूमि महाविहार में भी इसी प्रकार की बुद्ध प्रतिमा है। यह प्रतिमा आयुष्मती खूम विमला कनकफलोया, सदस्य, मिगदाय महाविहार फाउण्डेशन बँकाक, थाईलैंड द्वारा दानस्वरूप दी गई है। इस बुद्ध प्रतिमा की स्थापना 17 नवम्बर 1987 को भदन्त प्राकखु मेधीवरनुव्रत महाथेरा, थाईलैंड के द्वारा प्राप्त हुई है।

बाबासाहेब डॉ. आम्बेडकर को हमेशा चारिका करते बुद्ध की प्रतिमा ही अच्छी लगती थी उसी उद्देश्य से इस विहार में भगवान बुद्ध की चारिका मुद्रा प्रतिमा स्थापित की गई है। इसी विहार का सभागार इतना बड़ा है कि यहाँ एक साथ पांच सौ लोग बैठकर धम्मसवन कर करते हैं, ध्यानभावना कर सकते हैं। इस विहार में जापानी भन्ते सुरेई ससाईजी का स्थायी निवास है, जो पिछले तीस-चालीस साल से इसी विहार में रहे हैं। यहाँ कुछ भिक्खू भी स्थायी रूप से रहते हैं। इस विहार की एक ओर भिक्खुओं के रहने की भी व्यवस्था है।

इसके अलावा नागपुर में ऐसे कई विहार हैं। नागपुर से ही 15/20 किलोमीटर की दूरी पर चिचोली में भारतीय बौद्ध परिषद का एक महाविहार है जिसका संचालन वामनरावजी गोडबोले करते थे। इस महाविहार में डॉ. आम्बेडकर की अस्थियाँ रखी हुई हैं। यहाँ आम्बेडकर की वस्तुओं का संग्रहालय भी है। नागपुर कामठी रोडपर भीलगांव के पास नागलोक महाविहार का निर्माण सन 1955 त्रैलोक्य बौद्ध महासंघ ने किया है। नागपुर शहर से चालिस कि.मी की दूरी पर मनसर में मंजुसिरि महाविहार का निर्माण भदन्त सुरेई ससाई (जापान) जी ने किया है। उसी प्रकार नागपुर से 70/75 किलोमीटर की दूरी पर पवनी जहाँ प्राचीन बौद्धस्तूप हैं, अशोक पुर्व कालीक वही वैनगंगा नदी के पार सन 1985 में स्थापित पत्रा-मेता संघ (इण्डो-जापान बुद्धिस्ट फ्रेंडस् असोसियेशन) का महासमाधि भूमि महाविहार है।

उसी प्रकार वर्धा में बौद्ध विहार और शांति स्तूप हैं और इस तरह नागपुर और नागपुर के इर्द-गिर्द कई महत्वपूर्ण बुद्ध विहार हैं।

— प्रा. डॉ. आकाश दौलतराव गेडाम, यशवंतराव चौव्हाण कॉलेज ऑफ इंजिनियरिंग, नागपुर
मोबा. 99609 60273

— प्रा. मोहिनी पुंडलिकराव गजभिये
(वास्तुविशारद), पीआयएडीएस, नागपुर

संदर्भ :

1. डॉ. विमलकीर्ती "नासिक की बौद्ध गुफाएँ तथा नागपुर स्थित अन्य बौद्ध विहार", नागपुर (शोधपत्र)
2. बापट पी. वी. "बौद्धधर्म के 2500 वर्ष" पृष्ठ 277 Publication Indian Gov- New Delhi, 1997.
3. Gedam Akash Daulatrao (2019) A Pioneer to the Art of Nasik Cave, Dist- Nasik Maharashtra', IJSR Vol-8, Issue 9- pp 44-49.

संत रैदास की दलित चेतना : विविध आयाम

— डॉ. सचिन कदम

हिंदी संत काव्य भक्तिकाल की प्रमुख काव्य धारा है। भक्तिकाल हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग है। कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से इसका विशेष महत्त्व है। संत कवियों ने स्वानुभूति पर बल दिया। शताब्दियों से शोषित एवं पीड़ित, छुआछूत, ऊँच-नीच की भेद भावना तथा जन्मगत श्रेष्ठता का विरोध किया। शास्त्रवचन की अपेक्षा अनुभव को महत्त्व देते हुए सत्य का उद्घाटन किया। मध्यकालीन विकट एवं घोर अंधकारपूर्ण परिस्थितियों में स्वामी रामनन्द के मार्ग का अनुकरण करते हुए जिन संतों ने भारतीय समाज को निराशा एवं दलित, पीड़ित वर्ग को नवजीवन और व्यावहारिक संदेश दिया उनमें संत रैदास का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। कबीर के समकालीन संतों में रैदास का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था आदिकाल से ही संतों और महात्माओं के विचारों पर निर्भर रही है। जाति, धर्म और सम्प्रदाय का भेद मिटाकर सद्व्यक्तियों एवं सद्विचारों को भारत ने सदैव स्वीकार किया है। संत कबीर, संत तुकाराम, संत पीपा जैसे अनगिनत संत हैं जिन्होंने भारतीय समाज को एक नई धार्मिक एवं सामाजिक दृष्टि दी। संत रैदास इसी परंपरा के महान संत हैं।

संत रैदास एक महान क्रांतिकारी एवं समाज सुधारक थे। उन्होंने समाज के भीतर फैली जाति-पाँति, भेदभाव, सामाजिक विषमता, अस्पृश्यता, रुढ़ि-परंपरा आदि बाह्य आडम्बर का विरोध किया। हिंदू - मुस्लिम एकता और राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया। संत रैदास का तत्कालीन समाज वर्णाश्रम अवस्था से ग्रस्त था। जाति-पाँति, भेदभाव पर आधारित व्यवस्था का खुलकर विरोध किया। उन्होंने तत्कालीन समाज की रुढ़ियों और विषमताओं को भली प्रकार को देखा और समझा है। वे कहते हैं कि ऊँच-नीच का विचार एवं हीनता-श्रेष्ठता

की अवधारणा ने समाज को वर्गों में बाँटकर कमजोर किया है। संत रैदास जाति-पाँति का विरोध करते हुए कहते हैं कि समाज में एक ही जाति मानव की। जो सभी ईश्वर के पूत है। उनके शब्दों में :-

जन्म जात मत पूछिए, का जात अरु पात ।

‘रविदास’ पूत सभ प्रभ के, कोउ नहिं जात कुजात ॥¹

अतः जब तक यह जाति – पाँति रुपि कोढ़ समाज से दूर नहीं होता तब तक मनुष्य एक-सूत्र में नहीं बंध सकते।

संत रैदास एक महान विचारक थे जिन्होंने आध्यात्मिक, धार्मिक और सामाजिक चिंतन के साथ-साथ राजनीतिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीयता संबंधी विषयों पर भी अपने विचार प्रकट किये हैं। संत रैदास जिस संत मत के प्रचारक थे, उसमें मानवता को सर्वोपरि महत्त्व प्राप्त हुआ है। उन्होंने राम और रहिम के भेद को मिटाकर भक्ति के व्यापक भाव को स्वीकार किया। उन्होंने जन-साधारण को भक्ति का मार्ग अपनाने का संदेश दिया। संत रैदास की वाणी में देश प्रेम की भावना भी पायी जाती है। इनकी वाणी में पराधीनता को कलंक माना गया है। संत रैदास ने सर्व प्रथम आजादी का नारा बुलंद किया। संत रैदास के अनुसार गुलामों का अपना कोई धर्म नहीं होता। उन्होंने मुक्ति का संदेश देते हुए कहा है :-

पराधीन का दी क्या, पराधीन बेदीन ।

‘रविदास’ दास पराधीन को, सभी समझें हीन ॥²

संत रैदास ने तत्कालीन समाज में व्याप्त सामाजिक रुढियों का विरोध किया है। इन रुढियों में अवतारवाद एवं बहुदेववाद, मूर्ति-पूजा, तीर्थयात्रा, साम्प्रदायिकता, अंधविश्वास आदि का विरोध किया है। जिसके कारण समाज में अनेक कुप्रथाएँ चली आ रही थी। संत रैदास ने इन सभी रुढियों का विरोध कर समाज में आत्मविश्वास जगाने का प्रयास किया है। अतः आदर्श समाज की स्थापना करना ही संत रैदास का उद्देश्य था। वर्ण व्यवस्था एवं ऊँच-नीच, जाति – पाँति के भेदभाव के बारे में संत रैदास लिखते हैं-

‘रविदास’ जन्म के कारनै, होत न कोउ नीच ।

नर कू नीच करि डारि है, ओछे करम की किच ॥³

अर्थात् संत रैदास कहते हैं कि जन्म से कोई व्यक्ति ऊँच या नीच नहीं होता है। कर्मों से ही व्यक्ति की पहचान होती है।

पंडितों ने अर्थ लाभ के लिए परमात्मा को अवतारों की मूर्तियाँ बनाकर जन-सामान्य को गुमराह करना आरंभ कर दिया था। हिंदू मत में अर्थहीन क्रिया-कलाप बढ़ता गया। हिंदुओं में शूद्रों को वेद-शास्त्र आदि के पठन-पाठन का अधिकार नहीं था। देव-दर्शन के लिए मंदिर प्रवेश भी निषिद्ध था। हिंदुत्व की जाति व्यवस्था एवं अवतारों की मूर्ति पूजा ने एक ओर मिथ्याचारों को बढ़ावा दिया तो दूसरी ओर भेद-भावों की सृष्टि में अभिवृद्धि की। संत रैदास मूर्ति-पूजा का खण्डन करते हुए कहते हैं :-

पाती तोड़ै पूजि रचावै, तारन तरन कहै रे ।

मुरति मांहि बसै परमेसर, तौ जल में क्यों न तिरै रे ॥⁴

संत रैदास एक निर्गुण ब्रह्म की अपेक्षा और किसी अन्य देवी-देवता को नहीं पूजते थे।

संत रैदास ने समाज में व्याप्त हिंदू-मुस्लिम साम्प्रदायिकता का डटकर विरोध किया है। उन्होंने दोनों धर्मों के साम्प्रदायिकता की खाई मिटाते हुए मानवता का संदेश दिया है। संत रैदास ने तत्कालीन समाज में दोनों धर्मों के पंडितों और मुल्लाओं पर व्यंग्य करते हुए मानव को मानवता का मार्ग बतलाया है। यही भाव आज के समय में सामाजिक परिवर्तन, धार्मिक परिवर्तन एवं एकता का भाव पैदा करने में सफल सिद्ध होगा। संत रैदास की वाणी में राष्ट्रीय एकता की भावना एवं समतावादी, समाजवादी शासन व्यवस्था की कल्पना आज से कई वर्षों से पूर्व की थीं। -

ऐसा चाहौं राज मैं, जहाँ मिले सबन को अन्न ।

छोट बड़ो सभ सम बसैं, ‘रविदास’ रहै प्रसन्न ॥⁵

संत रैदास ने तत्कालीन मानव को आर्थिक परिस्थिति से उभरने के लिए श्रम साधना और प्रभु भक्ति का संदेश दिया है। संसार के जिस मानव के पास प्रभु भक्ति और श्रम साधना है। उसका जीवन सफल हो पाता है। इस

सत्य को संत रैदास ने मानव के सम्मुख रखा है। उनके शब्दों में –

प्रभु भगति श्रम साधना, जग मंह जिन्ह हिं पास।

तिन्हहिं जीवन सफल भयों, सत्त भाषै रविदास ॥⁶

संत रैदास ने श्रम को नेक कमाई बताकर उस पर आग्रहपूर्वक चलने के लिए कहते हैं।

संत रैदास की वाणी समाज को मानव समानता का संदेश देती है। उन्होंने मनुष्य-मनुष्य में ऊँच-नीच, जाति-पाँति आदि का भेदभाव मिटा कर प्रेम, करुणा और मानवीय उदारता के आधार पर मानव एकता का संदेश दिया था। संत रैदास का मानना था कि हम सब प्राणी एक ही ईश्वर की देन हैं। संत रैदास के अनुसार—

इक जोति तैं जड़ सम उपजै, तउ ऊँच नीच कस माना।⁷

संत रैदास की वाणी भक्ति के माध्यम से मानव और समाज के संबन्धों की मानवीय व्याख्या प्रस्तुत करती है। संत रैदास ने मानवतावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए कर्मकाण्डों एवं जात-पाँत का विरोध किया। संत रैदास कहते हैं—

जाति-पाँति का नहिं अधिकारा, भजन कीनै उतरै पारा।

वेद पुरान कहै दूहु बानि, भगति बसी है सारंगपाणि ॥⁸

संत रैदास का मानना था कि मनुष्य का चरित्र और आचार ही सबसे बड़ा होता है। वही मनुष्य ऊँचा है जो कथनी और करनी में भेद नहीं रखता।

संत रैदास ने समाज में व्याप्त हिंसा प्रवृत्ति का विरोध किया है। वे किसी भी प्राणी या जीव हिंसा के विरोधी थे। क्योंकि अहिंसा में ही विश्व शान्ति संभव है। अतः प्रभु के बनाए जीवों को मार कर प्रभु से मिलने की आशा करना बिल्कुल उचित नहीं है। जैसे—

‘रविदास’ जीव कू मारि कर, कैसा मिलहि खुदाय।

पीर पैगंबर औलिया, कोऊ न कहइ समुझाय ॥⁹

अर्थात् जीव की हिंसा करके कोई भला प्रभु को कैसे पा सकता है? यह बात क्या संत, महात्मा, पैगंबर, पीर, फकीर कोई भी मनुष्य को नहीं समझाता।

संत रैदास ने गुणों की महत्ता पर बल देते हुए

कहा है कि उस ब्राम्हण की पूजा मत करो जिसमें कोई गुण नहीं है। यदि कोई चांडाल गुणों से भरपूर हैं तो उसके चरण पूजने चाहिए –

रविदास ब्राम्हण मति पूजिए, जउ होवै गुनहीन।

पूजि ही चरन चंडाल के, जउ होवै गुण परवीन ॥¹⁰

संत रैदास की दृष्टि लोक जीवन को सुंदर, सुखमय बनाने पर रही है। इसीलिए वे शुद्ध लोकाचरण पर बल देते हैं। रैदास मानवीय सत्यों और मर्यादाबद्ध लोकजीवन के पक्षधर थे। रैदास की वाणी में लोक जीवन का मूल आधार है। उनकी वाणी में सत्य, अहिंसा, दया, और परोपकार को अपनाकर समाज में शांति की स्थापना का संदेश है।

संत रैदास ने मानव द्वारा जीव – हत्या का खण्डन करते हुए करारा व्यंग्य किया है। वे कहते हैं कि जो मुसलमान अपने शरीर पोषण के लिए नित्य गाय और बकरी का मांस खाता हो, और दिन-रात नमाज पढ़ता हो, उसे भी स्वर्ग की प्राप्ति नहीं हो पाती है। जैसे—

रविदास जउ पोषणह, गउ बकरी नित खाय।

पढ़ई नमाजै रात-दिन, तबहुं भिस्त न पाय ॥¹¹

संत रैदास ने मानवता का संदेश दिया है। जिसमें प्रमुख मानव समानता, श्रम साधना, अहिंसा, स्वाधीनता, वर्णव्यवस्था और जातिवाद, अंधविश्वास, मूर्तिपूजा का विरोध आदि मानवतावादी पहलुओं को आधुनिकता के संदर्भ में अनन्य साधारण महत्त्व प्राप्त हुआ है। आज भौतिकवादी मानव अपने भाग-दौड के जीवन में अस्त दिखाई देता है। मानव को और समाज को इस मानवतावादी संदेश द्वारा विश्वशांति की प्रेरणा मिलती है।

— डॉ. सचिन कदम

संगमनेर महाविद्यालय के सामने, शारदा बेकरी के पीछे
निर्मल नगर, संगमनेर, तहसील-संगमनेर
जिला-अहमदनगर-422605 (महाराष्ट्र)

मोबा. 9404051942

संदर्भ :

1. संत गुरु रविदास—डॉ. बेनीप्रसाद शर्मा—पृ. 26
2. गुरु रविदास : वाणी एवं महत्त्व — संपा — मीरा गौतम पृ. 405
3. निर्गुण काव्य में सामाजिक चेतना और संत रविदास का योगदान प्रा. प्रविण कांबळे पृ. 105
4. संत रविदास विचारक और कवि डॉ. पदम गुरुचरन सिंह पृ. 129
5. भक्त रविदास डॉ. रमेश मेहरा पृ. 126
6. रविदास दर्शन—आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद. पृ. 131
7. भक्त रविदास डॉ. रमेश मेहरा—पृ. 22
8. गुरु रविदास : वाणी एवं महत्त्व संपा — मीरा गौतम पृ. 157
9. गुरु रविदास : वाणी एवं महत्त्व संपा—मीरा गौतम पृ. 113
10. रविदास दर्शन आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद पृ. 28
11. रविदास दर्शन आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद पृ. 132

**भारतीय परिप्रेक्ष में जाति व्यवस्था :
डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर**

— डॉ. वसंत आबासाहेब खरात

जोतिबा फुले ब्राह्मण विरोधी आंदोलन के जनक थे। (1827—1890), इस आंदोलन का विस्तार महाराष्ट्र के बहुसंख्यक किसान मराठा समुदाय द्वारा किया गया था, लेकिन इस आंदोलन के तत्कालीन नेता उभरती हुई ग्रामीण पूंजीवादी शक्ति के राजनीतिक प्रतिनिधि होने के कारण इसे सामंतवाद और पूंजीवाद के खिलाफ एक कट्टरपंथी संघर्ष में नहीं बदल सके। इसीलिए गैर—ब्राह्मण आंदोलन बाद में राष्ट्रीय आंदोलन में ही विलीन हो गया, तो बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर के नेतृत्व में अछूतों का आंदोलन उभरा और आगे विकसित हुआ। डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने अछूतों को तथागत के धम्म में लाकर उन्हें सामाजिक और धार्मिक गुलामी से मुक्त कराया। इतना ही नहीं, उन्होंने लोकतंत्र की मांग करके राजनीतिक अधिकार भी प्राप्त कर लिये हैं। इसीलिए डॉ. अम्बेडकर ने कहा कि उनका आंदोलन गैर—ब्राह्मण आंदोलन का अगला चरण था।

डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर कहते हैं, “यह

सर्वविदित है कि इस देश में गैर—ब्राह्मण नामक एक आंदोलन है और यह शुद्र समुदाय का राजनीतिक आंदोलन है; और यह भी सर्वविदित है कि मैं उस आंदोलन से जुड़ा हुआ हूँ।” शुद्र कौन थे? इस ग्रंथ के माध्यम से प्राचीन भारतीय इतिहास के ऐसे मूलभूत प्रश्न का उत्तर देने का गंभीर प्रयास किया गया।

ब्राह्मणवादी बनाम गैर—ब्राह्मण दर्शन को अपनाना

फुले इस देश के पहले समाज सुधारक थे, जिन्होंने पहली बार ‘ब्राह्मण बनाम गैर—ब्राह्मण’ के संघर्ष को अपनी रचनाओं में दर्ज किया। डॉ. अम्बेडकर ने पश्चिमी दर्शन को अपने देश के ब्राह्मणवादी बौद्ध दर्शन के साथ जोड़ दिया, इसलिए इन दोनों भारतीय विद्वानों ने न केवल हमारे देश में बल्कि मार्क्सवादी वर्ग दर्शन में भी बहुत बड़ा योगदान दिया है। डॉ. अम्बेडकर इस देश के एकमात्र पहले नेता थे जिन्होंने जाति उन्मूलन के लिए म. फुले की लड़ाई अतिशूद्रों की लड़ाई में बदल दी। उसके लिए उन्होंने वर्ष 1936 में घोषणा की कि ‘जाति व्यवस्था के अंत के बिना वर्ग व्यवस्था का अंत संभव नहीं है’ इसीलिए डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने अपना सारा संघर्ष महिलाओं, शूद्रों और शूद्रों की मुक्ति के लिए किया। इसका एक हिस्सा है डॉ. अम्बेडकर ने अछूतों को सार्वजनिक मंदिरों और जल निकायों में प्रवेश की अनुमति देकर ऊंची जातियों के सामाजिक और धार्मिक एकाधिकार को तोड़ दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने मनुस्मृति के अनुसार नियमित किये गये नारी जीवन को नष्ट कर उसे जलाकर मुक्ति का निर्देश दिया और एक महान सामाजिक क्रांति लायी। चूंकि ये सभी प्रयास और रास्ते पूर्णता की ओर ले जाने के लिए पर्याप्त नहीं पाए गए, अंततः उन्होंने धर्मांतरण की घोषणा की और इसे लागू किया। इतना ही नहीं, उन्होंने किसानों, खेत मजदूरों और श्रमिकों का नेतृत्व करते हुए जाति—विरोधी संघर्षों के साथ—साथ वर्ग—विरोधी संघर्षों का भी नेतृत्व किया।

जाति की लड़ाई

डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर ने अपने 'कास्ट एनीहिलेशन' में कम्युनिस्टों और समाजवादियों को चेतावनी देते हुए हमारे देश में समाज की अनूठी वास्तविकता को उजागर किया है कि 'समाजवाद से पहले भारतीय समाज को जातिबद्ध करना होगा'। डॉ. अम्बेडकर के अनुसार जाति व्यवस्था गुलामी से भी बदतर है। इसीलिए वर्ष 1940 में उन्होंने जाति को वर्ग से अधिक कठिन बताते हुए जाति के लिए क्रांतिकारी रास्ता न अपनाते हुए इसे संसद पर छोड़ दिया। डॉ. अम्बेडकर की खोज हमारे देश की स्थापित सामाजिक व्यवस्था के चतुर्विध में शूद्र वर्ण की थी। वर्ष 1916 में अमेरिका के सेमिनार में उन्होंने जो शोध पत्र 'भारत में जातियाँ, उनकी व्यवस्था, उत्पत्ति और विकास' प्रस्तुत किया था, उसमें प्राचीन भारतीय समाज को जीवंत बनाया गया था। उन्होंने बताया कि वह एक जाति-समाज बन गये हैं।

जाति स्थानांतरण असंभव

वर्ग एक भौतिकवादी अवधारणा है जो आर्थिक असमानताओं से उत्पन्न होती है और आर्थिक स्तर या मानदंड परिस्थितियों के अनुसार बदल सकते हैं या समय के साथ उनके बीच परिवर्तन हो सकते हैं। लेकिन चूंकि जाति व्यक्ति को जन्म से ही जकड़ लेती है और उसका अस्तित्व मृत्यु तक व्यक्ति को घेरे रहता है, इसलिए ऐसे किसी भी समय और परिस्थिति में जाति की अवधारणा में कोई बदलाव होना संभव नहीं है। मनुष्य अपनी पिछली जाति से दूसरी जाति में नहीं जा सकता। वास्तव में, जाति व्यवस्था के रीति-रिवाज और परंपराएँ स्वभाव से बहुत दमनकारी हैं। परिणामी असमानता राष्ट्रवाद के मार्ग में एक बड़ी बाधा उत्पन्न करती है।"

निष्कर्ष :

हमारे देश और सामाजिक व्यवस्था, जाति व्यवस्था में चाहे कितने भी परिवर्तन क्यों न हो गए हों, भारतीय मनुष्य एक जाति में पैदा होता है और एक जाति में ही

मर जाता है। जातिगत मानसिकता के कारण आज भी दलित आदिवासी जाति-जनजातियों पर अत्याचार जारी है। इसलिए, हमारे देश में लोकतंत्र की पूर्ति केवल अर्ध-सामंतवाद या पूंजीवादी जमींदारीवाद को नष्ट करने से नहीं होगी, बल्कि इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यहां की जाति व्यवस्था को नष्ट किया जाना चाहिए। आज भी शूद्रातिशूद्रों पर अत्याचार बढ़ रहे हैं। अंतरजातीय विवाह जैसे मामलों के माध्यम से जातिगत भेदभाव को खत्म करने के बजाय, ऐसा करने वालों की सामूहिक हत्या की जा रही है। इसलिए एट्रोसिटी एक्ट का कोई डर नहीं है। इसलिए यदि पिछड़ी जातियों को न्याय दिलाना है तो सामाजिक भावनाओं को पूरा करना होगा।

— डॉ. वसंत आबासाहब खरात

सं.न.कला, दा.ज.मालपाणी वाणिज्य

एवं ब.ना.सारडा विज्ञान

महाविद्यालय, संगमनेर जि.अहमदनगर-422605

(महाराष्ट्र) Mob. 9850060645

संदर्भ :

1. कौ. पाटील शरद, दास-शूद्रांची गुलामगिरी, खंड 1, भाग 1, मावळाई प्रकाशन, शिरूर (जि. पुणे), 2008
2. नवभारत (संपा.), मार्क्सवाद-फुले-आंबेडकरवाद, फेब्रुवारी 1980
3. खैरमोडे चां. भ., डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर - चरित्रग्रंथ, खंड 6, महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कृती मंडळ, मुंबई, 1985
4. आंबेडकर डॉ. बी. आर. अनीहिलेशन ऑफ कास्ट, द भारत, भूषण प्रिंटिंग प्रेस, मुंबई, 1945
5. कौ. पाटील शरद, मार्क्सवाद-फुले-आंबेडकरवाद, सुगावा प्रकाशन, पुणे, 1993
6. रणसुभे विलास (संपा.), जात-वर्ग व परिवर्तनाचा लढा, लोकवाङ्मय गृह, मुंबई, 2008
7. डॉ. किशोरकुमार गव्हाणे, महाराष्ट्रातील समाज सुधारणेचा इतिहास, एज्युकेशन पब्लिसर्स अँड डिस्ट्रीब्युटर्स, औरंगाबाद, 2014
8. जोतीराव गोविंदराव फुले, सार्वजनिक सत्यधर्म, समताप्रकाशन नागपूर, 2001
9. डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर, जातींचे निर्मुलन, युग साक्षी प्रकाशन, रिंगरोड, नागपूर, २०१२

प्रसन्नता का सूचकांक : भारत के संदर्भ में

— डॉ. प्रताप जगन्नाथ फलफले

प्रस्तावना :

विश्व प्रसन्नता सूचकांक रिपोर्ट (डब्ल्यूएचआर) में, खुशी का स्कोर जीवन की संतुष्टि के एक सर्वेक्षण से आता है, जो कुछ इस प्रकार है : अपने जीवन को समग्र रूप से ध्यान में रखते हुए और मानसिक छवि का उपयोग करते हुए, सर्वोत्तम संभव जीवन को 10 और सबसे खराब के रूप में देखें। 0 के रूप में संभव है, इंगित करें कि सीढ़ी पर आप व्यक्तिगत रूप से कहाँ खड़े हैं। यह प्रश्न मूल रूप से लोगों को अपने और अपने संसाधनों, उपलब्धियों, अवसरों और स्थिति के बारे में सोचने पर मजबूर करता है।

WHR 2023 ने फिनलैंड को लगातार छठे वर्ष सबसे खुशहाल देश घोषित किया है। भारत की रैंकिंग 136 से बढ़कर 125 हो गई है, हालाँकि, यह अभी भी अपने पड़ोसियों बांग्लादेश, नेपाल और चीन से पीछे है। सबसे कम दंगा-ग्रस्त समाज और दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था वाले सूचकांक में भारत को लगातार नीचे रखा गया है। स्कैंडिनेवियाई देश आमतौर पर सूची में शीर्ष पर हैं, अमेरिका मध्य किशोरावस्था में कुछ स्थान पर है, और युद्धग्रस्त और अत्याधिक गरीब देश सबसे नीचे हैं। इससे आश्चर्य होता है कि क्या खुशी की रैंकिंग किसी निश्चित दर्शन या सांस्कृतिक आदर्शों के प्रति पक्षपाती है ?

प्रसन्नता सूचकांक एक सर्वेक्षण है जो हमारे जीवन के 10 विभिन्न क्षेत्रों में आपकी प्रसन्नता को मापता है। प्रसन्नता सूचकांक एक व्यापक सर्वेक्षण उपकरण है जो प्रसन्नता, भलाई और स्थिरता और लचीलेपन के पहलुओं का आकलन करता है।

प्रसन्नता सूचकांक का इतिहास

वर्ष 2012 में देशों में किए गए एक सर्वेक्षण के आधार पर पहला प्रसन्नता सूचकांक दिया गया था। यह सर्वे विश्व प्रसन्नता सूचकांक रिपोर्ट के दौरान पेश

किया गया, जैसा कि सर्वेक्षण किया जा रहा था, नागरिकों को 0 से 10 के पैमाने पर अपनी प्रसन्नता का मूल्यांकन करने के लिए कहा गया था।

विश्व प्रसन्नता सूचकांक

विश्व प्रसन्नता सूचकांक 2023 रिपोर्ट इस साल के विश्व प्रसन्नता सूचकांक रिप्लेक्ट के साथ अपनी दसवीं सालगिरह को चिह्नित करेगी, जो अंतर्राष्ट्रीय सर्वेक्षणों के डेटा का उपयोग करके दिखाती है कि 150 से अधिक देशों में लोग अपने जीवन को कैसे रैंक करते हैं। इस अंधेरे समय में, विश्व प्रसन्नता सूचकांक 2023 से आशावाद की झलक मिलती है। महामारी ने न केवल पीड़ा की, बल्कि इससे सामाजिक सहायता और धर्मार्थ दान में भी वृद्धि हुई।

विश्व प्रसन्नता सूचकांक 2023 : मुख्य विशेषताएं

- विश्व प्रसन्नता सूचकांक रिपोर्ट के अनुसार फिनलैंड को लगातार पांचवें साल दुनिया का सबसे खुशहाल देश नामित किया गया।
- संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास समाधान नेटवर्क ने एक नई रिपोर्ट प्रकाशित की है, जिसे वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय खुशी दिवस से दो दिन पहले सार्वजनिक किया गया था।
- यह जीडीपी, जीवन प्रत्याशा और जीवन की गुणवत्ता के अन्य संकेतकों जैसे कारकों के आधार पर 150 देशों (2023 में 146) को रेटिंग देता है।
- रैंकिंग, अब अपने ग्यारहवें वर्ष में, तीन वर्षों में एकत्र किए गए डेटा के औसत और एक गणितीय सूत्र के आधार पर 0 और 10 के बीच स्कोर प्रदान करती है।
- संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी एक वार्षिक सर्वेक्षण के अनुसार, रूस के लिए यह वर्ष खुशहाल नहीं है क्योंकि वह इस वर्ष फिर से वैश्विक प्रसन्नता रैंकिंग में गिर गया है।

• प्रसन्नता में योगदान देने वाले कारकों, जैसे प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद, सामाजिक समर्थन, स्वस्थ जीवन प्रत्याशा, सामाजिक स्वतंत्रता, दान और भ्रष्टाचार की कमी के अनुसार, विश्व खुशी रिपोर्ट 156 देशों को रैंक करती है।

भारत का विश्व प्रसन्नता सूचकांक

वैश्विक खुशहाली रैंकिंग में भारत अब 125 वें स्थान पर है। 2021 में विश्व की खुशहाली की 9 वीं विश्व प्रसन्नता सूचकांक रिपोर्ट की रैंकिंग में भारत 139 वें नंबर पर आया। यह मार्च 2021 में उपलब्ध हो गया। भारत 2020 में 144 वें स्थान पर रहा। विश्व प्रसन्नता सूचकांक रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्र में सतत विकास समाधान नेटवर्क द्वारा प्रकाशित की जाती है। अध्ययन का सबसे हालिया संस्करण 20 मार्च, 2021 को जारी किया गया था, जो विश्व खुशी दिवस था।

नाखुश भारत के कारण

विश्व खुशहाली रिपोर्ट में भारत की निम्न रैंक को कई कारणों से जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, जैसे :

1. आय असमानता : सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक होने के बावजूद, भारत में आय असमानता एक बड़ी चिंता का विषय बनी हुई है, जिसका प्रतिशत बहुत अधिक है गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाली जनसंख्या का।

2. बेरोजगारी और अल्प-बेरोजगारी : भारत में बेरोजगारी और अल्प – बेरोजगारी के उच्च स्तर का सामना करना पड़ता है, जिसमें बड़ी संख्या में श्रमिक कार्यरत हैं अनौपचारिक क्षेत्र, जिसमें अक्सर नौकरी की सुरक्षा और सामाजिक लाभों का अभाव होता है।

3. सामाजिक और राजनीतिक अशांति : भारत हाल के वर्षों में सामाजिक और राजनीतिक अशांति का सामना कर रहा है, जिसमें जाति आधारित हिंसा, धार्मिक संघर्ष और राजनीतिक ध्रुवीकरण, जो लोगों की भलाई की भावना को प्रभावित कर सकता है।

4. खराब स्वास्थ्य और स्वच्छता : भारत स्वास्थ्य और स्वच्छता के मामले में निचले स्थान पर है,

जहां आबादी के एक बड़े प्रतिशत के पास स्वच्छ पानी तक पहुंच नहीं है।

5. पर्यावरणीय गिरावट : भारत को वायु और जल प्रदूषण, वनों की कटाई और जलवायु परिवर्तन जैसी महत्वपूर्ण पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो लोगों के जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है।

6. तनावपूर्ण कार्य परिस्थितियाँ : भारत में कई लोग तनावपूर्ण कार्य परिस्थितियों का सामना करते हैं, जिनमें लंबे समय तक काम करना, कम वेतन और खराब कार्य – जीवन संतुलन शामिल हैं। जो उनकी भलाई और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डाल सकता है।

उपयुक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि, विश्व खुशहाली रिपोर्ट में भारत की उपरोक्त रैंक में योगदान करते हैं, जो सामाजिक और सामाजिक मुद्दों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं। आर्थिक विकास, पर्यावरणीय स्थिरता, और सभी नागरिकों के लिए जीवन की गुणवत्ता सुधार।

प्रसन्नता सूचकांक सुधार के लिए नीतिया

विश्व प्रसन्नता सूचकांक में भारत की स्थिति में सुधार करना एक जटिल कार्य है जिसके लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। कुछ महत्वपूर्ण नीतिया इस प्रकार हैं जो भारत को बेहतर स्थिति हासिल करने में मदद करेंगी :

1. शिक्षा में निवेश करें : शिक्षा किसी व्यक्ति की भलाई और जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत को शिक्षा में और अधिक निवेश करने की जरूरत है एक जानकार और कुशल कार्यबल तैयार करना जो देश की वृद्धि और विकास में योगदान दे सके।

2. आय असमानता को संबोधित करें : आय असमानता एक प्रमुख कारक है जो किसी देश में खुशी के स्तर को प्रभावित करती है। भारत को आय के मुद्दे पर ध्यान देने की जरूरत है धन के समान वितरण को बढ़ावा देने वाली नीतियों को लागू करके असमानता।

3. अच्छे स्वास्थ्य को बढ़ावा दें : खुशी के लिए अच्छा स्वास्थ्य आवश्यक है। भारत को अपने नागरिकों को सस्ती और सुलभ स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है उनके समग्र कल्याण में सुधार करें।

4. सामाजिक मुद्दों का समाधान : भेदभाव, लैंगिक असमानता और जाति जैसे सामाजिक मुद्दे खुशी के स्तर पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं। भारत को चाहिए अधिक समावेशी और सामंजस्यपूर्ण समाज बनाने के लिए इन मुद्दों का समाधान करें।

5. कार्य-जीवन संतुलन को प्रोत्साहित करें : कार्य-जीवन संतुलन खुशी के लिए महत्वपूर्ण है। भारत को ऐसी नीतियों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है जो कार्य-जीवन संतुलन को बढ़ावा दें, जैसे लचीले कामकाजी घंटे, माता-पिता की छुट्टी और छुट्टी का समय।

6. दया और सहानुभूति की संस्कृति को बढ़ावा दें : दया और सहानुभूति खुशी को बढ़ावा देने में काफी मदद कर सकती है। भारत को दयालुता की संस्कृति को बढ़ावा देने की जरूरत है सहानुभूति, जहां लोगों को एक-दूसरे की मदद करने और जरूरतमंद लोगों के प्रति दया दिखाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

7. स्थिरता पर ध्यान दें : स्थिरता खुशी का एक महत्वपूर्ण घटक है। भारत को सतत विकास पर ध्यान देने की जरूरत है, जो आर्थिक संतुलन बनाए रखता है पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक विकास के साथ विकास।

इन रणनीतियों को लागू करने से भारत को विश्व खुशहाली सूचकांक में बेहतर स्थान प्राप्त करने और अपने नागरिकों की समग्र भलाई में सुधार करने में मदद मिल सकती है।

निष्कर्ष

अंत में, यह शोध पत्र किसी व्यक्ति के जीवन में

खुशी और कल्याण के महत्व के साथ-साथ व्यापक संदर्भ पर भी प्रकाश डालता है। राष्ट्र की वृद्धि और विकास. खुशी सूचकांक, एक व्यापक सर्वेक्षण उपकरण का उपयोग लोगों खुशी और संतुष्टि के स्तर का आकलन करने के लिए किया जाता है।

विभिन्न देशों के नागरिक. विश्व खुशहाली रिपोर्ट, जो हर साल तैयार की जाती है, राष्ट्रों को उनकी सामूहिक खुशी और लक्ष्य के आधार पर रैंक करती है। देश की सांख्यिकीय स्थिति से परे विकास को पकड़ें। यह शोध विश्व खुशहाली रिपोर्ट में भारत की गिरती स्थिति पर भी प्रकाश डालता है। और इसके कारणों की पहचान करता है, जिसमें भौतिकवादी मूल्य, अपर्याप्त सामाजिक कल्याण और व्यक्तिपरक कल्याण पर ध्यान देने की कमी शामिल है।

विश्व प्रसन्नता सूचकांक में भारत को बेहतर स्थान दिलाने के लिए रणनीतियों का सुझाव दिया गया है, जिसमें परोपकारिता, सामाजिक कल्याण की भावना को बढ़ावा देना और शामिल करना शामिल है। मानवता, उदारता और सहिष्णुता के मूल्यों को जीवन के तरीके में शामिल करें। व्यक्तिगत लाभ से परे देखना और राज्य प्राप्ति की दिशा में प्रयास करना आवश्यक है। जीवन में खुशियाँ, जो लंबे समय तक मन की शांति बनाए रख सकती हैं। खुशी सूचकांक और डब्ल्यूएचआर व्यक्तिपरक कल्याण को उच्च स्तर से देखते हैं। व्यावहारिक दृष्टिकोण, और राष्ट्र और उसके लिए बेहतर भविष्य सुनिश्चित करने के लिए भौतिकवादी तरीके से खुशी प्राप्त करने की दिशा में काम करना आवश्यक है।

— डॉ. प्रताप जगन्नाथ फलफले

सं.न. कला, दा. ज. मालपाणी वाणिज्य
एवं ब. ना. सारखा विज्ञान
महाविद्यालय, संगमनेर जि. अहमदनगर

संदर्भ :

1. वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट, "वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट 2022", <https://worldhappiness-report/ed/2022>
2. लगातार चौथे साल फिनलैंड को दुनिया का सबसे खुशहाल देश कौन बनाता है ?
<https://www-helsinki-times-fi/lifestyle/19066-what-makes-finland-the-happiest-country-in-the-world-for-the-fourth-consecutive&year-html>
<https://indiancc-mygov-in/wp-content/uploads/2022/08/mygov-999999992128489152-pdf>
3. खुशी सूचकांक पर भारत की रैंकिंग क्यों गिर रही है
<https://www-governancenow-com/news/regular-story/why-indias-ranking-on-happiness-index-has-been-falling>
4. विश्व खुशहाली रिपोर्ट 2022 छवि स्रोत : संयुक्त राष्ट्र सतत विकास समाधान नेटवर्क।

ISSUES AND CHALLENGES TO DEALING WITH AI-ASSISTED TERRORISM

- Pragati Navanath Dhakane
Research Scholar
- Dr. Adhara Deshpande

Abstract

This paper discusses the problems posed by terrorist using Artificial Intelligence (AI) in their destructive activities. There is a major concern caused by the threat of Deep fake, misinformation issues, Chat platforms and other such offences which are seriously affecting people. AI is a fast-growing technology which is capable of causing high-level destruction if not controlled properly on time. Terrorists using AI have to be dealt with in specialized ways as they pose a serious threat to the Indian security system. AI terrorism is on the rise, and abusers are able to

hide behind the anonymity of the internet. Therefore, a need is felt to understand the challenges posed by AI-assisted terrorism so that it can be dealt effectively.

KEYWORDS : Artificial intelligence (AI), Algorithm, Modern Terrorism, Technology.

I. Introduction-

With AI, we all are entering a new era. The understanding of the pervasiveness of AI is essential to guard against current and future threats. India needs to study this in depth and see how AI-related work will be done within the framework of law in the public interest first. And the discussion of this danger is also going on in the world. According to neural net pioneer Geoffrey Hinton, AI refers to machine learning and neural networks used for basic tasks; it would be good for the world and everyone if it remained in a non-lethal manner and under legal control.

Alan Turing one of the fathers of artificial intelligence, saved millions of lives by deciphering German code messages from Bletchley Park during World War II. The first AI Safety Summit was held in Bletchley Park, North London which was attended by the leaders of the 28 countries and the heads of the leading entrepreneurs in the field on 1st to 2nd, November, 2023, at the initiative of Hon'ble British Prime Minister.¹ India also participated in this. On 12th December, 2023 in New Delhi, Hon'ble Prime Minister of India inaugurated Global Partnership on Artificial Intelligence Summit. He stated that India will work to protect and provide direction to the entire humanity. India will chair it the year 2025 and draft policies on AI."²

II. Meaning and origin of terms-

(i) **Artificial Intelligence-** According to

the Oxford Dictionary³ the capacity of computers or machines to exhibit or simulate intelligent behaviors; the field of study concerned with this.

(ii) **AGI-** Artificial general intelligence (AGI) is a branch of theoretical AI research working to develop AI with a human level of cognitive function, including the ability to self-teach. However, not all AI researchers believe that it is even possible to develop an AGI system, and the field is divided on what factors constitute and can accurately measure intelligence.⁴

AI is similar to the one mentioned in the National Strategy for AI, 2018,⁵ a constellation of technologies that enable machines to act with higher levels of intelligence and emulate the human capabilities of sense, comprehend and act. Computer vision and audio processing can actively perceive the world around them by acquiring and processing images, sound and speech. But the definition is not fixed all over the world.

III. AI and India-

Many Indian experts in AI came together and opened the National Portal on 28th May, 2020 with the initiative of the Ministry of Electronics and IT (MeitY), National e-Governance Division (NeGD) and National Association of Software and Service Companies (NASSCOM).

Any rising nation, such as India, must consider the potential harm and devastation that technology could bring about at the hands of terrorists when designing a counterterrorism program in the age of artificial intelligence. We must be ready for everything the terrorists may throw at us and have a plan in place right away for a successful counterattack. To counteract

terrorism, swift, decisive, and stringent measures must be taken at that very moment. To stop terrorists from using AI technology improperly and bringing harm to the Indian people, we must erect a protective wall through proper laws and effective administrative offices.

IV. Significant issues and concerned threats-

(i) The safety of Indian people has been challenged continuously.

(ii) The pressure of misuse of computational powers especially in economic systems.

(iii) The risk of unlocked AI potentials is puzzling.

(iv) The revolutionary damages are growing to progressing to several fields

(v) The security threats are increasing.

V. AI-Assisted terrorism-

Terrorists use contemporary methods all over the world to sway people and increase the threat level of their actions. The goal of terrorists using AI is to become more potent and destructive. The use of AI and contemporary methods in terrorism increases terrorists' destructiveness and delivers accuracy. Terrorists nowadays are very interested in non-visual threats and cybercrimes. Terrorists regularly commit a variety of crimes in modern times, such as obtaining fraudulent money through the misuse of tactics, developing tools for artificial intelligence attacks and technology, spreading ideologies to influence innocent people, enhancing terrorists' strategies for bettering their ability to hire AI specialists, analyzing massive amounts of data, and accomplishing other goals. AI algorithms

must be understood in order to gather massive amounts of data in order to gain crucial insights into terrorists' operations.

The Indian government is preparing to combat the modern terrorism. So it is time to make stringent laws to combat terrorism as:

- a. To pass the bills which affect of declaration of laws.
- b. To get faster or speedier justice through courts with trained judges in the use of technology.
- c. To keep simple and handholding legal communication process
- d. To analysis strategic decision-making properly

VI. Challenges-

1. AI-based offences like deep fake, Chat platforms, and Unmanned Aerial systems (drones) are playing conspire and cyber attacks in India.

2. More destruction and more terrorist activities are possible from the accurate and speedy use of AI.

3. Videos, Audios, photos and high-potential devices are make easy optimization of methods and operations of terrorists.

4. The new threats from modern terrorism are their emerging advanced technology with more youth being roped in.

5. The online communication platforms like Rokect.chat have been misused by Islamic States (IS) and Al-Qaeda in 2018. It proved that terrorists can be used AI algorithms wrongly.

6. With the help of AI-assisted drones, terrorists can neutralize the problem of the use of weaponization.

VII. Conclusion-

The Indian government should focus on

new policies, and regulations to combat terrorism. The meaning of AI is vast and changing as per advanced technology. Matching to modern AI technology is the most challenging issue today. Moreover, if terrorists decide to attack with the help of AI in weaponry, the legal framework should be created in India as soon as possible so that modern technology does not become a curse. Otherwise, it will be difficult to control the

AUTHOR

- PRAGATI NAVANATH DHAKANE

Ph.D Research Scholar,
PGTD of Law, RTM, Nagpur University, Nagpur
Address: 25, Shivirth bungalow,
Jay Bajrang Society, Seminary Hills,
Nagpur- 440006 Cell: 7775022007

CO-AUTHER

- DR. ADHARA DESHPANDE

Assistant Professor,
R.T.M.N.U's Dr. Babasaheb Ambedkar
Law College, Nagpur Cell: 9890069731
61, Swavlambi Nagar, Nagpur- 440022 (M.S.)

References :

1. AI safety summits hosted by the UK government on 1st to 2nd November, 2023; <https://www.aisafetysummit.gov.uk/>
2. Press report of Prime Minister's office, "PM inaugurates annual Global partnership artificial intelligence (GPAI) summits", published by Press information bureau of government of India; <https://pbi.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1985585>.
3. "Artificial Intelligence", Oxford English Dictionary, Oxford UP, March 2024; <https://doi.org/10.1093/OED/3194963277>.
4. Elyse Bell, "Artificial General Intelligence (AGI): Definition, How It Works, Examples", published by investopedia, under business column of products and services on 02.08.23; <https://www.investopedia.com/artificial-general-intelligence-7563858>
5. Government of India, "Responsible AI #AIforall, Approach document for India part-1 responsible AI", published by Niti Ayog on February 2021, page no. 16; <https://www.niti.gov.in/sites/default/files/2021-02/Responsible-AI-220220221.pdf>.

महान जन नायक बिरसामुण्डा
का शहीदी दिवस 9 जून



शत - शत नमन



छन्नपति राजश्री शाहू महाराज जयंति
26 जून



शत - शत नमन



पर्यावरण के आधार स्तंभ वृक्ष-पौधों की रक्षा का संस्कार भारतीय संस्कृति के माध्यम से यहाँ हर मनुष्य में रचा बसा है।

प्रकृति की आत्मा है वृक्ष, पृथ्वी का श्रृंगार है वृक्ष, धरती माता का वैभव है वृक्ष। आज सबसे अधिक आक्रमण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इसी प्रकृति पर हो रहा है, परिणाम स्वरूप प्रदुषण, ज्वलंत समस्या के रूप में हमारे सम्मुख खड़ा है।

एक जानकारी के अनुसार प्रतिदिन मनुष्य 21 किलो 600 ग्राम श्वास लेता है। अर्थात् 16 किलो 200 ग्राम ऑक्सीजन लगती है। इस प्रकार मानव जीवन में वृक्ष का महत्व सर्वाधिक है।

निःसन्देह “वृक्ष है तो हम है।”

पंजीयन संख्या

RNI No. MPHIN/2002/9510

डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2024-2026 उज्जैन (म.प्र.)

प्रतिष्ठा में,



पत्र व्यवहार का पता :

20, बागपुरा, सांवेर रोड,
उज्जैन 456 010 (म.प्र.)

| | | | | | |
|--|--|--|--|--|--|
| | | | | | |
|--|--|--|--|--|--|

प्रकाशक, मुद्रक पिंकी सत्यप्रेमी ने भारती दलित साहित्य अकादमी की ओर से मालवा ग्राफिक्स, 29, वररुचि मार्ग, गुरुद्वारे के सामने, फ्रीगंज, उज्जैन फोन : 0734-4000030 से मुद्रित एवं 20, बागपुरा, सांवेर रोड, उज्जैन 456 010 (म.प्र.) फोन : 0734-25 18379 से प्रकाशित।

सम्पादक : डॉ. तारा परमार